

खबर संक्षेप

मेडिकल स्टार से चोरी करने वाला गिरफ्तार

हिसारअर्बन एस्टेट चौकी पुलिस ने डाबड़ा चौक स्थित मेडिकल स्टोर से दवाइयां चोरी करने के मामले में एक आरोपी सिवानी निवासी ललित वर्मा को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी की गई दवाइयां बरामद की हैं। पुलिस के अनुसार इस संबंध में पटेल नगर की मनोहर कॉलोनी निवासी नीरज अहलवार ने शिकायत दी थी कि उसने डाबड़ा चौक पर स्वागत होम्योपैथिक स्टोर के नाम से मेडिकल स्टोर किया हुआ है। शिकायत के मुताबिक, स्टोर पर काम करने वाला कर्मचारी शुभम कामत कुछ समय के लिए बाहर गया था। इसी दौरान सिवानी निवासी ललित वर्मा ने मेडिकल स्टोर से दवाइयां चोरी कर लीं। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामले दर्ज कर जांच शुरू की।

बाइक चोरी के मामले में दूसरा आरोपी काबू

हिसार। आजाद नगर थाना पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के मामले में दूसरे आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान भाटला गांव निवासी सकीम के रूप में हुई है। पुलिस चोरी की मोटरसाइकिल को पहले ही बरामद कर चुकी है। पुलिस के अनुसार, 30 जून को आजाद नगर के तुलसी विहार निवासी सुनील कुमार ने शिकायत दी थी कि उसकी हीरो एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल घर के सामने से चोरी हो गई। शिकायत के आधार पर केस दर्ज करके पुलिस ने जांच शुरू की। जांच के दौरान मुख्य सिपाही जगदीप ने कार्रवाई करते हुए मामले में दूसरे आरोपी सकीम को गिरफ्तार कर लिया।

शिक्षामंत्री ढांडा ने 12 में से दस विवादों को मौके पर निपटाया

दो मामलों के समाधान को लेकर अफसरों को दिए जरूरी निर्देश

जिला लोक संपर्क एवं कष्ट निवारण समिति की बैठक विधायक विधायक भयाना भी रहे मौजूद

हरिभूमि न्यूज ॥ हांसी

एसडी महिला महाविद्यालय के सभागार में शनिवार को शिक्षा मंत्री महोपाल ढांडा की अध्यक्षता में जिला परिवेदना समिति की दूसरी बैठक आयोजित की गई। बैठक में विधायक विनोद भयाना, उपायुक्त राहुल नरवाल, पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी एवं समिति के सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में विभिन्न विभागों से संबंधित 12 जनपरिवाद प्रस्तुत किए गए, जिनमें से 10 परिवारों का शिक्षा मंत्री ने मौके पर ही समाधान किया, जबकि दो मामलों को लंबित रखते हुए संबंधित अधिकारियों को उचित कार्रवाई कर समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे नागरिकों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करें। बैठक के दौरान ढाणी पुरिया ग्राम पंचायत द्वारा बरसाती नाले से संबंधित शिकायत प्रस्तुत की गई। शिकायत पर संज्ञान लेते हुए कैबिनेट मंत्री ने संबंधित



हांसी। जिला परिवेदना समिति की बैठक में जनसमस्याएं सुनते शिक्षा मंत्री महोपाल ढांडा, विधायक विनोद भयाना व डीसी राहुल नरवाल। फोटो: हरिभूमि

पेयजल में होगा सुधार

ग्राम पंचायत शिराया द्वारा पेयजल समस्या को लेकर रखी गई शिकायत पर कैबिनेट मंत्री ने जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से परियोजना की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली। अधिकारियों ने बताया कि गांव में पेयजल व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए परियोजना का टेंडर अलौट हो चुका है तथा जल्द ही मौके पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। शिक्षा मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कार्य में अनावश्यक देरी न हो।

विभाग के अधिकारियों को नाले का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूरा करवाने के निर्देश दिए। ग्रामीणों से भी अपील की कि नाले के निर्माण कार्य में किसी प्रकार का व्यवधान न डालें, बल्कि विकास कार्य को पूरा करवाने में प्रशासन का सहयोग करें, ताकि बरसाती पानी की निकासी की समस्या का स्थायी समाधान किया जा सके। हांसी निवासी प्रवेश जांगड़ा द्वारा

संत शिरोमणि गुरु रविदास ने समाज को जोड़ने का काम किया : महोपाल ढांडा

नारनौद। संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज मंदिर-मठ में चारागंजी से पधारी पवित्र कलश यात्रा का भव्य स्वागत एवं कलश स्थापना कार्यक्रम गांव मोठ में आयोजित किया गया। इस अवसर पर विधिवत पूजा-अर्चना कर कलश की स्थापना की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्री महोपाल ढांडा, विधायक विनोद भयाना शिरकत की उन्होंने कहा कि हमें संत रविदास के पद चिन्हों पर चलकर उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए उन्होंने समाज को जोड़ने का काम किया था। आज भाजपा भी 36 बिरादरी में आपसी भाईचारा कायम करके प्रदेश में विकास करने का काम कर रही है। जिला कार्यक्रम संयोजक सुरेश धमसी ने बताया कि जो मिट्टी संत रविदास के जन्म स्थल से लाई गई है। उस मिट्टी से गांव मोठ के इस मंदिर में कलश स्थापित किया गया है। इसी कड़ी में गांव मोठ में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक सैनी, जिला मंत्री विजेंद्र लोहान, करणपाल पेटवाड़, महावीर श्योरान, पार्षद सुनील बैरागी, सोनू नरवाल, राजवीर खेड़ी आदि रहे।

पेयजल एवं सीवरेज से संबंधित शिकायत पर शिक्षा मंत्री ने जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को दोनों समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने के निर्देश दिए।



नारनौद। शिक्षा मंत्री कलश को उठाए हुए साथ में विधायक विनोद भयाना।

डीसी ने गैबीपुर के सरपंच पवन कुमार को किया निलंबित

हरिभूमि न्यूज ॥ बरवाला

ग्राम पंचायत गैबीपुर के सरपंच पवन कुमार को गंभीर प्रकृति के आरोपों के मामले में डीसी महेंद्रपाल ने तत्काल प्रभाव से सरपंच पद से निलंबित कर दिया है। उपायुक्त ने यह कार्रवाई हरियाणा पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 51(1)(ख) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए की है।

लापरवाही और सुनवाई से दूरी पड़ी मारी

प्रशासनिक आदेश के अनुसार, खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी (बीडीपीओ), बरवाला द्वारा की गई प्रारंभिक जांच में सरपंच पवन कुमार गंभीर आरोपों के दोषी पाए गए थे। इसके बाद उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया गया, जिसकी तामील 27 अक्टूबर 2025

कार्यवाहक सरपंच की नियुक्ति

बीडीपीओ बरवाला को निर्देश दिए गए हैं कि वे पंचायत में बहुमत रखने वाले पंच को कार्यवाहक सरपंच का प्रभार सौंपकर इसकी रिपोर्ट तुरंत उपायुक्त कार्यालय को भेजें। इस निर्बंधन आदेश की प्रतियां राज्य निर्वाचन आयोग हरियाणा, संबंधित विभागों, एसडीएम बरवाला, बीडीपीओ बरवाला तथा निलंबित सरपंच को आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रेषित कर दी गई हैं। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि निर्बंधन का यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है।

26 फरवरी 2026 को करवाई गई थी। नोटिस का जवाब 7 दिन के भीतर देना अनिवार्य था, लेकिन निर्धारित समय सीमा समाप्त होने के बाद लगभग 5 महीने और 14 दिन बीत जाने पर भी सरपंच की ओर से कोई स्पष्टीकरण प्रस्तुत नहीं किया गया। प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के तहत 16 अप्रैल 2026 को उपायुक्त के समक्ष व्यक्तिगत सुनवाई के लिए नोटिस दिया गया था, लेकिन सरपंच उपस्थित नहीं हुए। सरपंच की इस अनुपस्थिति से यही प्रतीत होता है कि उन्हें अपने बचाव में कुछ नहीं कहना था और उन्होंने अपने ऊपर लगे आरोपों को स्वीकार कर लिया है। उपायुक्त ने हरियाणा पंचायती राज अधिनियम की धारा 51(2) के तहत कार्रवाई करते हुए पवन कुमार के भविष्य में पंचायत की किसी भी कार्यवाही या बैठक में भाग लेने पर रोक लगा दी है। निलंबित सरपंच के पास मौजूद ग्राम पंचायत का समस्त रिकॉर्ड, धनराशि और चल-अचल संपत्ति को तुरंत पंचायत में बहुमत रखने वाले पंच को सौंपने के सख्त निर्देश जारी किए गए हैं।

सीसीटीवी फुटेज से पुलिस ने आरोपी को पकड़ा

बरवाला। बरवाला पुलिस ने घर में घुसकर मोबाइल फोन और नकदी चोरी करने के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान बरवाला की हीरा कॉलोनी निवासी गुरुचरण के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरीशुदा मोबाइल फोन भी बरामद कर लिया है। पुलिस के अनुसार, वार्ड नंबर 19, बरवाला निवासी अनिल कुमार ने शिकायत दी थी कि 10 अगस्त को वह किसी काम से घर से बाहर गया हुआ था। इस दौरान उसकी पत्नी ने मोबाइल फोन चारजिंग पर लगाया था। पीछे से एक व्यक्ति घर में घुसा और मोबाइल फोन चोरी कर ले गया। बाद में सोफे के नीचे रखी करीब 1000 से 1200 रुपये की नकदी भी गायब मिली।

बी.पी.एड. (B.P.Ed.) में दाखिला आरंभ

पी.टी.आई. तथा डी.पी.ई. (शांतिरक्षक शिक्षा निदेशक) के पद पर होगी नियुक्ति राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त एवं इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी (IGU) से सम्बंधित महाराणा प्रताप कालेज ऑफ एजुकेशन, धनीन्दा (ब्लॉक - कनीस), जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) में सत्र 2026-28 हेतु बी.पी.एड. (B.P.Ed.) (डी.पी.ई. कोर्स), में दाखिला आरंभ हो गया है। बी.पी.एड. में प्रवेश हेतु स्नातक में 50% अंकों तथा राज्य सरकार का खेल का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है। एस.सी. विद्यार्थियों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी सीधे कॉलेज में दाखिला ले सकते हैं तथा www.mpcokanina.com व कॉलेज फोन नं. 9467834482, 8053190428 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (Adv.)

OMSTERLING

GLOBAL UNIVERSITY

(APPROVED BY UGC, MINISTRY OF EDUCATION, GOVT. OF INDIA)

EXCELLENCE IN EDUCATION

18 Years

Discover more at

www.osgu.ac.in

info@osgu.ac.in

f

@

in

in

in

SECURE YOUR SEAT

★ M.Pharm / Pharm.D

★ B.Pharm / D.Pharm

★ BFA/MFA

★ B.Sc./M.Sc. Agri.

★ B.Tech. - CSE - AIML, Cyber Security

★ B.Sc/M.Sc Hotel Mgmt.

★ BA LLB/LLB/LLM

★ BCA - (AI & Data Science, Cyber Security)

★ BA/BBA

★ B.Sc. (Forensic Science)

★ B.Ed. Special Education (HI / VI / ID / LD / MD)

★ B.Ed. M.Ed. Special Education (ID/SLD)

RCI APPROVED COURSES

CODE HR 056

Bachelor in Allied Healthcare (Para Medical)

(BMLS, B.Optomety, B.AOTT)

Diploma in Palliative Care Technology,

Diploma in Health Information Management,

Diploma in Medical Secretarial and Transcription

SALIENT FEATURES :

✓ Professional Education through reputed Academicians

✓ Modern Campus, Sports & Hostel Facilities

✓ Expert Career & Placement Support (Govt./Private)

✓ Govt. & Industries Collaboration for Advanced Learning

SEPARATE HOSTEL FACILITY AVAILABLE FOR BOTH GIRLS & BOYS

Campus : NH-52, Hisar-Chandigarh Road, Hisar-125001, Haryana

86078 99999

82550 99999

TATA की पेशकश

TANISHQ

Festival of Diamonds

नेचुरल डायमंड्स से सजे मनमोहक डिजाइन, जो आपकी चमक को सबसे अलग बनाएँ

पलैट 20% छूट

10,000+ डिज़ाइन्स में डायमंड की कीमत पर*

0% क़दौती*

डायमंड ख़रीदने पर 9 केरल रिटोले कम के पुराने सोने के एक्स्चेंज पर।

शोरूम :- पीएलए मार्किट के सामने, रिलायंस फ्रेश के पास, दिल्ली रोड, हिसार, टेली. 1800 890 6026



दोस्त या रिश्तेदार की मदद पड़ेगी भारी

लोन में गारंटर बनने के कई नुकसान

बिजनेस डेस्क

दोस्त, रिश्तेदार या करीबी व्यक्ति मुश्किल समय में आर्थिक मदद मांगता है तो मना करना आसान नहीं होता। कई बार व्यक्ति खुद लोन लेने की स्थिति में होता है, लेकिन बैंक की शर्तों के कारण उसे गारंटर की जरूरत पड़ती है। ऐसे में भावनात्मक रिश्ते के कारण लोग बिना पूरी जानकारी लिए लोन गारंटर बनने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन गारंटर बनना महज एक औपचारिकता नहीं है। इसका अर्थ है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी देनदारी पूरी नहीं करता, तो गारंटी की शर्तों के अनुसार बैंक आपसे भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। इसलिए किसी के लोन की गारंटी देने से पहले यह समझना जरूरी है कि इससे आपके क्रेडिट रिकॉर्ड, भविष्य में लोन लेने की क्षमता और व्यक्तिगत वित्त पर क्या असर पड़ सकता है।

गारंटर बनने का मतलब क्या

लोन में गारंटर वह व्यक्ति होता है जो बैंक या वित्तीय संस्थान को यह आश्वासन देता है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता तो लागू गारंटी की शर्तों के अनुसार वह देनदारी पूरी करेगा। इसलिए किसी दस्तावेज पर सिर्फ इसलिए हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए कि सामने वाला दोस्त या रिश्तेदार है। हस्ताक्षर करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आप किस रकम, किस अवधि और किन शर्तों के लिए गारंटी दे रहे हैं।

गारंटर बनते ही क्रेडिट स्कोर घटता है

नहीं, केवल गारंटर बनने से अपने आप क्रेडिट स्कोर खराब होना जरूरी नहीं है। अगर मुख्य उधारकर्ता समय पर ईएमआई चुका रहा है और लोन खाते में कोई डिफॉल्ट नहीं हो रहा है, तो सामान्य तौर पर केवल गारंटर होने की वजह से आपके क्रेडिट रिकॉर्ड पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता। लेकिन समस्या तब शुरू हो सकती है जब मुख्य उधारकर्ता ईएमआई चुकाने में लगातार चूक करता है। ऐसी स्थिति में लोन खाते से जुड़ी डिफॉल्ट जानकारी गारंटर के क्रेडिट प्रोफाइल को भी प्रभावित कर सकती है। लगातार भुगतान में चूक होने से भविष्य में आपकी क्रेडिट हिस्ट्री पर नकारात्मक असर पड़ने का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए गारंटर बनने के बाद भी लोन की स्थिति पर नजर रखना जरूरी है।

बड़ा खतरा : कर्ज चुकाने की जिम्मेदारी

गारंटर बनने का सबसे महत्वपूर्ण जोखिम आर्थिक है। यदि मुख्य उधारकर्ता लोन की किस्तें नहीं चुका पाता है तो बैंक या वित्तीय संस्थान गारंटी समझौते की शर्तों के अनुसार गारंटर से भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। यानी जिस लोन का पैसा आपने लिया ही नहीं, उसकी जिम्मेदारी कुछ परिस्थितियों में आपके ऊपर भी आ सकती है। यही वजह है कि गारंटर बनने से पहले यह सवाल खुद से जरूर पूछें। अगर सामने वाला व्यक्ति कल से ईएमआई देना बंद कर दे तो क्या में इस लोन की जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ? अगर इसका जवाब 'नहीं' है तो अगर रिश्तेदारी या दोस्ती के दबाव में गारंटर बनना जोखिम भरा हो सकता है।

लोन लेने में आ सकती है दिक्कत

गारंटर बनने का असर केवल क्रेडिट स्कोर तक सीमित नहीं है। जब आप भविष्य में होम लोन, कार लोन या कोई अन्य बड़ा कर्ज लेने के लिए अपेदन करते हैं तो बैंक आपकी मौजूदा वित्तीय जिम्मेदारियों और क्रेडिट प्रोफाइल का आकलन कर सकता है। जिस लोन की आपने गारंटी दी है, वह आपकी वित्तीय प्रोफाइल के आकलन में महत्वपूर्ण हो सकता है। खासकर यदि उस लोन में भुगतान संबंधी समस्या चल रही हो तो आपके लिए नया कर्ज लेना कठिन हो सकता है या बैंक अतिरिक्त जांच कर सकता है।

रिश्तेदार है तो भी पहले जांच करें

गारंटर बनने से पहले केवल रिश्ते को आधार न बनाएं। यह जानना जरूरी है कि जिस व्यक्ति के लोन की गारंटी आप दे रहे हैं, उसकी आय कितनी है, उसकी मौजूदा ईएमआई कितनी है और उस पर पहले से कितना कर्ज है। यह भी देखें कि उसकी नौकरी या कारोबार कितना स्थिर है। यदि उसकी आय अनिश्चित है या पहले से कई कर्ज चल रहे हैं तो गारंटर बनने का जोखिम बढ़ सकता है।

दस्तावेज पढ़े बिना न करें हस्ताक्षर

गारंटी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले बैंक से स्पष्ट रूप से पूछें कि आपकी जिम्मेदारी की सीमा क्या है। क्या गारंटी केवल मूल रकम तक सीमित है या इसमें ब्याज, शुल्क और अन्य देनदारियां भी शामिल हो सकती हैं? यह जानकारी दस्तावेज की शर्तों से ही स्पष्ट होगी। इसलिए किसी बैंक कर्मचारी, एजेंट या परिचित के कहने मात्र पर दस्तावेज पर हस्ताक्षर न करें। जरूरत हो तो स्वतंत्र वित्तीय या कानूनी सलाह भी ली जा सकती है।

ईएमआई की जानकारी लेते रहें

अगर आपने किसी के लोन की गारंटी दी है तो यह मानकर न चले कि अब आपकी कोई भूमिका नहीं है। मुख्य उधारकर्ता से समय-समय पर ईएमआई भुगतान की स्थिति की जानकारी लेते रहें। किसी भुगतान में देरी की जानकारी मिले तो समस्या बढ़ने से पहले उधारकर्ता से बात करें। शुरुआती स्तर पर समस्या का समाधान करना लंबे समय तक चलने वाले डिफॉल्ट से बेहतर है।

दोस्ती और पैसा, दोनों को अलग रखें

किसी करीबी की मदद करना अच्छी बात है, लेकिन मदद का अर्थ अपनी आर्थिक सुरक्षा को जोखिम में डालना नहीं होना चाहिए। यदि आपको लगता है कि सामने वाला व्यक्ति लोन चुकाने की स्थिति में नहीं है तो गारंटर बनने के बजाय अपनी क्षमता के अनुसार सीमित आर्थिक सहायता करना ज्यादा सुरक्षित विकल्प हो सकता है।

फैसला लेने से पहले ये जरूर पूछें

- » क्या मैं इस व्यक्ति की आय और मौजूदा कर्ज को समझता हूँ?
- » अगर वह ईएमआई नहीं चुका पाया तो क्या मैं संभावित वित्तीय जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ?
- » क्या मैंने गारंटी दस्तावेज की सभी शर्तें पढ़ी हैं?
- » क्या भविष्य में मुझे खुद होम, कार या किसी दूसरे बड़े लोन की जरूरत पड़ सकती है?

मदद करें, लेकिन जोखिम समझकर

लोन गारंटर बनना दोस्त या रिश्तेदार की मदद करने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन इसमें वित्तीय जोखिम भी जुड़ा है। समय पर ईएमआई वाली रकमे पर समस्या नहीं आती, लेकिन मुख्य उधारकर्ता के डिफॉल्ट की स्थिति में गारंटर की क्रेडिट प्रोफाइल और आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। इसलिए गारंटर बनने से पहले भावनात्मक रिश्ते से ज्यादा महत्वपूर्ण अपनी भुगतान क्षमता, दस्तावेज की शर्तों और भविष्य की वित्तीय जरूरतों को समझना है। किसी की मुश्किल में साथ देना अच्छी बात है, लेकिन ऐसी मदद न करें जो बाद में आपके ही परिवार की आर्थिक सुरक्षा को मुश्किल में डाल दे।

दस साल में चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न

10 वर्ष में 4 लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न, हर माह 10000 की एसआईपी से 12 लाख का निवेश 31 लाख से ज्यादा, चारों फंडों ने दिया 18 से 19% तक एक्सआईआरआर

निवेश नत्रा बिजनेस डेस्क

लंबी अवधि में संपत्ति बनाने के लिए म्यूचुअल फंड की लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी निवेशकों के लिए एक विकल्प हो सकती है। इस श्रेणी के फंड बड़ी और स्थापित कंपनियों के साथ मध्यम आकार की तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों में निवेश करते हैं। नियमों के अनुसार, ऐसे फंडों को कम से कम 35 प्रतिशत राशि लार्ज कैप और 35 प्रतिशत मिड कैप कंपनियों में लगानी होती है। इस तरह कम से कम 70 प्रतिशत पोर्टफोलियो देश की बाजार पूंजीकरण के लिहाज से शीर्ष 250 कंपनियों में रहता है। 18 अगस्त 2026 को उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ऐसे रहे, जिनमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 31 लाख रुपये से ज्यादा हो गया। इनमें सबसे बेहतर प्रदर्शन इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड का रहा, जिसने 19.3 प्रतिशत का एक्सआईआरआर दिया।

इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड

इस सूची में इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड पहले स्थान पर है। अगस्त 2007 में शुरू हुआ यह फंड पहले इनवेस्को इंडिया ग्रोथ अपॉय्च्युनिटीज फंड के नाम से जाना जाता था। फंड शेयरों का चयन करने के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर, दोनों तरह की रणनीति का इस्तेमाल करता है। इसमें किसी एक सेक्टर या निवेश शैली पर अत्यधिक निर्भरता नहीं रखी जाती। इस फंड में 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 33.2 लाख रुपये हो गया। इस आधार पर इसका एक्सआईआरआर 19.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में इंटरनेल, मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट, इंटरग्लोब एविएशन, आईसीआईसीआई बैंक और प्रेस्टिज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, करीब 38.1 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 35.9 प्रतिशत मिड कैप और 23.1 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में था।

क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। दिसंबर 2006 में शुरू हुआ यह फंड शेयरों के चयन में आंकड़ों पर आधारित रणनीति अपनाता है। फंड हाउस का वीएलआरटी ढांचा कंपनियों के मूल्यांकन, नकदी की उपलब्धता, जोखिम और निवेश के सही समय जैसे पहलुओं को ध्यान में रखता है। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड

तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। जुलाई 1998 में शुरू हुए इस फंड को 2018 में मौजूदा लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी के अनुसार पुनर्गठित और नामित किया गया था। इसलिए 2018 से पहले के प्रदर्शन की मौजूदा रणनीति के साथ सीधे तुलना करना उचित नहीं होगा। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड का निवेश बड़ी स्थापित कंपनियों के साथ उभरती कंपनियों में भी है। यह अपेक्षाकृत मजबूत बुनियादी स्थिति वाली और उचित मूल्यांकन वाली कंपनियों पर ध्यान देता है। इसके प्रमुख निवेशों में एसबीआई काइर्स एंड पेमेंट सर्विसेज, इंटरग्लोब एविएशन, बजाज फिनसर्व, सोना वीएलडब्ल्यू प्रिसिजन फोर्जिंग्स और इंडसईड बैंक शामिल रहे।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड

तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। जुलाई 1998 में शुरू हुए इस फंड को 2018 में मौजूदा लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी के अनुसार पुनर्गठित और नामित किया गया था। इसलिए 2018 से पहले के प्रदर्शन की मौजूदा रणनीति के साथ सीधे तुलना करना उचित नहीं होगा। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड का निवेश बड़ी स्थापित कंपनियों के साथ उभरती कंपनियों में भी है। यह अपेक्षाकृत मजबूत बुनियादी स्थिति वाली और उचित मूल्यांकन वाली कंपनियों पर ध्यान देता है। इसके प्रमुख निवेशों में एसबीआई काइर्स एंड पेमेंट सर्विसेज, इंटरग्लोब एविएशन, बजाज फिनसर्व, सोना वीएलडब्ल्यू प्रिसिजन फोर्जिंग्स और इंडसईड बैंक शामिल रहे।

निवेश के ये फॉर्मूले, अपनाएं कभी नहीं रहेगा पैसे का संकट

जानकारी बिजनेस डेस्क

पैसे को दोगुना से चार गुना तक आसानी से कर सकेंगे

इमरजेंसी फंड व इक्विटी डेट का संतुलन बनाएंगे

निवेश की दुनिया में विकल्पों की कोई कमी नहीं है। बैंक एफडी, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, इक्विटी, डेट और सोने जैसे कई माध्यमों में पैसा लगाया जा सकता है। लेकिन निवेश में सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि पैसा कहाँ लगाया गया है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि कितनी राशि निवेश की जा रही है, कितने समय के लिए निवेश किया जा रहा है और जोखिम को किस तरह नियंत्रित किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से वित्तीय योजना में कुछ आसान नियमों का इस्तेमाल किया जाता है। इन नियमों की मदद से निवेशक मोटे तौर पर यह समझ सकता है कि उसका पैसा कितने समय में दोगुना या चार गुना हो सकता है, आय का कितना हिस्सा खर्च और बचत में जाना चाहिए तथा इमरजेंसी के लिए कितनी रकम अलग रखनी जरूरी है। हालांकि ये नियम अनुमान देने वाले सामान्य वित्तीय फॉर्मूले हैं, इन्हें निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए।

रूल ऑफ 72, 114 और 144 कंपाउंडिंग को समझने के आसान तरीके हैं, जबकि 50-30-20, 100 माइनस एज और 10 फीसदी निवेश जैसे नियम व्यक्तिगत वित्त को व्यवस्थित करने में मदद कर सकते हैं। लेकिन किसी भी नियम को अंतिम निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। सही रणनीति बनाने के लिए निवेशक को अपनी आय, उम्र, जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य, कर्ज और निवेश की अवधि को ध्यान में रखना चाहिए। सबसे जरूरी बात यह है कि पहले इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा जैसी वित्तीय सुरक्षा तैयार करें, फिर लक्ष्य के मुताबिक नियमित और अनुशासित निवेश करें। निवेश में जल्द अमीर बनने के बजाय लंबे समय तक टिके रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

1. रूल ऑफ 72

रूल ऑफ 72 का इस्तेमाल यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि किसी निवेश को दोगुना होने में लगभग कितना समय लग सकता है। इसके लिए 72 को अनुमानित सालाना रिटर्न से भाग दिया जाता है।

फॉर्मूला: 72 ÷ अनुमानित रिटर्न = पैसा दोगुना होने का अनुमानित समय
उदाहरण के लिए, अगर किसी निवेश से सालाना 12 फीसदी रिटर्न मिलने की उम्मीद है तो 72÷12 = 6। यानी अनुमान के तौर पर पैसा करीब छह साल में दोगुना हो सकता है। इसी तरह चार साल में पैसा दोगुना करने के लिए करीब 18 फीसदी सालाना रिटर्न की जरूरत होगी। बाजार आधारित निवेश में वास्तविक रिटर्न अलग हो सकता है।

2. रूल ऑफ 114

अगर आप यह जानना चाहते हैं कि आपका निवेश लगभग कितने समय में तीन गुना हो सकता है तो रूल ऑफ 114 इस्तेमाल किया जाता है।

फॉर्मूला: 114 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = 12 फीसदी अनुमानित सालाना रिटर्न के मामले में 114÷12 = 9.5 साल। यानी इस फॉर्मूले के अनुसार निवेश को तीन गुना होने में करीब साढ़े नौ साल लग सकते हैं।

3. रूल ऑफ 144

रूल ऑफ 144 से यह अनुमान लगाया जाता है कि निवेश कितने समय में चार गुना हो सकता है।



फॉर्मूला: 144 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = अगर अनुमानित रिटर्न 12 फीसदी सालाना है तो 144÷12 = 12 साल। यानी इस गणना के अनुसार पैसा करीब 12 साल में चार गुना हो सकता है। कंपाउंडिंग का असर लंबी अवधि में निवेश की वृद्धि को काफी प्रभावित करता है।

4. 50-30-20 रूल

मासिक बजट को व्यवस्थित रखने के लिए 50-30-20 नियम काफी लोकप्रिय है। इसके अनुसार आय का करीब 50 फीसदी हिस्सा जरूरी खर्चों, 30 फीसदी गैर-जरूरी जरूरतों या इच्छाओं और 20 फीसदी बचत एवं निवेश के लिए रखा जा सकता है।

हालांकि हर व्यक्ति की आय, पारिवारिक

जिम्मेदारियां और खर्च अलग होते हैं। इसलिए इसे एक शुरुआती बजटिंग फ्रेमवर्क की तरह इस्तेमाल करना बेहतर है। जिन लोगों पर कर्ज का बोझ अधिक है, वे निवेश से पहले महंगे कर्ज को कम करने पर भी ध्यान दे सकते हैं।

5. 100 माइनस एज रूल

निवेश पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का अनुपात तय करने के लिए 100 माइनस एज नियम का इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसमें निवेशक की उम्र को 100 से घटाया जाता है। बची हुई संख्या को इक्विटी में निवेश का संभावित प्रतिशत माना जाता है। मसलन, 30 साल के निवेशक के लिए 100-30 यानी 70 फीसदी इक्विटी और 30 फीसदी डेट का

अनुपात माना जा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ इक्विटी का हिस्सा कम करने का विचार जोखिम को नियंत्रित करने से जुड़ा है।

6. न्यू, 10% निवेश नियम

इस नियम के अनुसार आय का कम से कम 10 फीसदी हिस्सा लंबी अवधि के लक्ष्यों के लिए निवेश किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात नियमित निवेश है। आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाते रहना चाहिए। मसलन, अगर किसी व्यक्ति की मासिक आय 50 हजार रुपये है तो शुरुआत में कम से कम 5 हजार रुपये लंबी अवधि के निवेश के लिए अलग रखे जा सकते हैं। भविष्य में वेतन बढ़ने पर निवेश राशि बढ़ाने से कंपाउंडिंग का लाभ और मजबूत हो सकता है।

7. इमरजेंसी फंड रूल

सारी बचत को निवेश कर देना समझदारी नहीं है। अचानक नौकरी जाने, बीमारी, घर की मरम्मत या किसी अन्य आपात स्थिति में तुरंत उपलब्ध पैसे की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए कम से कम छह महीने के जरूरी खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह दी जाती है। अगर किसी परिवार का जरूरी मासिक खर्च 40 हजार रुपये है तो छह महीने के दिहाब से करीब 2.4 लाख रुपये का आपातकालीन फंड लक्ष्य बनाया जा सकता है। इस रकम को ऐसे माध्यम में रखना बेहतर होता है जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो।

निवेश हरिभूमि 8

बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड

चौथे स्थान पर बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। अगस्त 2005 में शुरू हुआ यह फंड पहले बंधन कोर इक्विटी फंड और उससे पहले आईडीएफसी कोर इक्विटी फंड के नाम से जाना जाता था। इसका उद्देश्य अच्छी तरह संवर्धित और टिकाऊ कारोबार वाली ऐसी कंपनियों में निवेश करना है, जिनके शेयर उचित मूल्यांकन पर उपलब्ध हों। इसमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का कुल निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, कोटक महिंद्र बैंक, वलेश कन्सुलिकेंशंस और इंफोसिस शामिल रहे। पोर्टफोलियो में करीब 39.4 प्रतिशत लार्ज कैप, 36.2 प्रतिशत मिड कैप और 18.6 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में निवेश था।

सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश न करें

इन फंडों के 10 साल के आंकड़े आकर्षक जरूर हैं, लेकिन केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला करना उचित नहीं है। लार्ज एंड मिड कैप फंड में मिड कैप कंपनियां का पर्याप्त हिस्सा होता है। इसलिए शेयर बाजार में बड़ी गिरावट आने पर इन फंडों में भी तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। निवेशकों को फंड का प्रदर्शन अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में देखना चाहिए। यह देखना जरूरी है कि फंड ने अपने बेचमार्क और समान श्रेणी के दूसरे फंडों की तुलना में कितनी निरंतरता दिखाई है। इसके अलावा फंड की निवेश रणनीति, पोर्टफोलियो की गुणवत्ता, जोखिम और खर्च जैसे पहलुओं को भी समझना चाहिए।

पैसा सुरक्षित दिखने के बावजूद कम रिटर्न देने वाला निवेश कर सकता है नुकसान

पहचानें और समय रहते लें फैसला इससे परेशानी से बचा जा सकेगा

अलर्ट बिजनेस डेस्क

निवेश करते समय ज्यादातर लोग इस बात पर ध्यान देते हैं कि उनका पैसा डूब तो नहीं रहा। लेकिन केवल मूल रकम सुरक्षित रहना ही अच्छे निवेश की निशानी नहीं है। अगर आपका पैसा लंबे समय तक ऐसे निवेश में फंसा हुआ है, जो मामूली या लगभग शून्य रिटर्न दे रहा है, तो वह देखने में सुरक्षित होने के बावजूद आपकी संपत्ति बढ़ाने की क्षमता को कमजोर कर सकता है। निवेश की दुनिया में ऐसे निवेश की आमतौर पर ‘डेड मनी’ कहा जाता है। ‘डेड मनी’ का मतलब किसी ऐसे निवेश से है, जिसमें पैसा लगा हुआ है, लेकिन लंबे समय से उस पर अपेक्षित वृद्धि नहीं हो रही। जरूरी नहीं कि ऐसे निवेश में निगेटिव रिटर्न ही मिल रहा हो। कई बार निवेश का मूल्य थोड़ा बढ़ता है, लेकिन महंगाई और दूसरे सामान निवेशों के मुकाबले उसका प्रदर्शन इतना कमजोर होता है कि पैसा प्रभावी रूप से निष्क्रिय पड़ा रहता है।

मूल पैसा सुरक्षित फिर भी नुकसान

मान लीजिए आपके पास एक लाख रुपये हैं और आपने उन्हें ऐसे फंड में लगा रखा है, जो लंबे समय तक बहुत कम रिटर्न दे रहा है। एक-दो साल बाद भी अगर आपकी रकम लगभग उतनी ही है, तो पहली नजर में लग सकता है कि आपको कोई नुकसान नहीं हुआ। लेकिन इसी अवधि में बाजार के दूसरे समान फंडों ने बेहतर प्रदर्शन किया हो तो आपका पैसा वहां ज्यादा बढ़ सकता था। यहीं ‘अपॉयुनिटी कॉस्ट’ सामने आती है। यानी जिस निवेश में आपका पैसा अटक रहा, उसकी वजह से आप बेहतर रिटर्न वाले दूसरे अवसर का फायदा नहीं उठा पाए। इसलिए निवेश में केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि पैसा घटा या बढ़ा, बल्कि यह भी देखना जरूरी है कि वह आपके लक्ष्य के मुताबिक पर्याप्त गति से बढ़ रहा है या नहीं।

खबर संक्षेप

लुवास में शुरू हुआ विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन

हिसार। लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास), में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिले की प्रक्रिया शुरू हो गई है। विश्वविद्यालय के बीबीएससी एवं एएच पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन शुरू हो चुके हैं। इच्छुक अभ्यर्थी बिना विलंब शुल्क 2 सितंबर 2026 तक आवेदन कर सकते हैं, जबकि विलंब शुल्क के साथ आवेदन की अंतिम तिथि 6 सितंबर निर्धारित की गई है।

जन्माष्टमी को लेकर शुरू हुई प्रभातफेरी

हनुमान मंदिर द्वारा श्रीमद् भागवत कथा व जन्माष्टमी महोत्सव को लेकर बरवाला शहर में सात दिवसीय प्रभात फेरी का शुभारंभ किया गया। यह प्रभात फेरी प्रधान मदन लाल गिरधर के नेतृत्व में निकाली गई। मंच संचालक सतीश काटपाल और जे.के.चानना ने बताया कि यह प्रभात फेरी प्रथम दिन हनुमान मन्दिर से प्रारंभ होकर वार्ड नंबर 3,4,5 व 6 की विभिन्न गलियों व चौक चौराहो से होते हुए वापिस अपने गंतव्य स्थान पर पहुंची।

1 से 14 तक चलेगा कुछ रोग खोजी अभियान

हिसार। राष्ट्रीय कुछ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत जिला में 1 सितंबर से 14 सितंबर तक विशेष कुछ रोग खोजी अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समुदाय में छिपे हुए कुछ रोगियों की पहचान करना, उन्हें समय पर उपचार उपलब्ध कराना और बीमारी से होने वाली विकलांगता को रोकना है। जिला कुछ रोग अधिकारी डॉ. जितेंद्र शर्मा ने बताया कि अभियान के तहत स्वास्थ्य विभाग की टीमें चयनित ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में घर-घर जाकर सर्वे करेंगी।

जिंदल पार्क में वाहनों के चालान पर जताया रोष

हिसार। जिंदल मॉनिंग क्लब के सदस्यों की एक बैठक बरवाला रोड स्थित जिंदल पार्क हुई। बैठक की अध्यक्षता हरियाणा नागरिक कल्याण परिषद के अध्यक्ष श्रेयांस जैन एवं समाजसेवी ईश्वर बिन्दल ने की। बैठक में क्लब के सदस्यों ने कुछ समय से ट्रैफिक पुलिस की वैन तथा 112 की टीम द्वारा पार्क के बाहर खड़े कुछ स्कूटर, मोटरसाइकिल और स्कूटी के चालान किए जाने पर रोष व्यक्त किया। सदस्यों का कहना था कि जिन वाहनों के चालान किए जा रहे हैं, वे पीली रेखा के अंदर खड़े होते हैं और उनके अनुसार किसी प्रकार के पार्किंग नियम का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं।

हकुवि में आज राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनेगा

हिसार। भारत की अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़ती उपलब्धियों, वैज्ञानिक प्रगति तथा राष्ट्र के विकास में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 23 अगस्त को हकुवि के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

महाविद्यालय में लगा नेत्र जांच शिविर

हिसार। राजकीय महिला महाविद्यालय में छात्राओं और शिक्षकों को जागरूक करने के उद्देश्य से नेत्र जांच शिविर लगाया गया। रेड क्रॉस, रेड रिबन, फर्स्ट एड एवं हेल्थ चेक-अप एक्टिविटीज क्लब ने मनोविज्ञान विभाग के सहयोग से शिविर लगा। शिविर में ‘आई व्यू’ होस्पिटल से पहुंची विशेषज्ञ चिकित्सकों ने करीब 100 छात्राओं और शिक्षकों की आंखों की जांच की।

राजगढ़ रोड क्षेत्र में आज बाधित रहनेगी विद्युत आपूर्ति

हिसार। बिजली निगम की ओर से राजगढ़ रोड क्षेत्र में आवश्यक विद्युत कार्य करवाए जाने के कारण 23 अगस्त को कई फोडरों की विद्युत आपूर्ति प्रातः 3 बजे से 9 बजे तक बाधित रहेगी। संबंधित क्षेत्र के उपभोक्ताओं से अनुरोध है कि निर्धारित समय के दौरान असुविधा के लिए सहयोग प्रदान करें।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विवि के शोध को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान

शोधार्थी दीपा का शोध पीडीएफ-5 प्लस 2027 रिलीज का हिस्सा बना

कुलपति ने प्रो. नीतू अहलावत, शोधार्थी दीपा और पूरी टीम को दी बधाई

हरिभूमि न्यूज

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय सामग्री विज्ञान के क्षेत्र में एक और बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि दर्ज की है। विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की प्रो. नीतू अहलावत के निर्देशन में शोधार्थी दीपा द्वारा तैयार शुद्ध सोडियम बिस्मथ टाइटेनेट सिरैमिक का नया एक्स-रे डिफ्रैक्शन (एक्सआरडी) पैटर्न दुनिया के प्रतिष्ठित इंटरनेशनल सेंटर फॉर डिफ्रैक्शन डेटा (आईसीडीडी) के पीडीएफ-5 प्लस 2027 डेटाबेस में शामिल किया गया है।



हिसार। प्रो. नीतू अहलावत और उनकी टीम को बधाई देते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई। फोटो: हरिभूमि

इस उपलब्धि से गुजवि को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक मंच पर नई पहचान मिली है। प्रो. नीतू अहलावत और उनकी टीम ने यह उपलब्धि

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई के साथ साझा की। कुलपति ने प्रो. नीतू अहलावत, शोधार्थी दीपा और पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि

शोधकर्ताओं के लिए बनेगा उपयोगी रेफरेंस

आईसीडीडी का पीडीएफ-5 प्लस डेटाबेस विश्वसनीय क्रिस्टलोग्राफिक और एक्सआरडी डेटा का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्रोत माना जाता है। किसी नए प्रयोगात्मक एक्सआरडी पैटर्न का इस डेटाबेस में शामिल होना शोध की गुणवत्ता, सटीकता और वैज्ञानिक महत्व का महत्वपूर्ण प्रमाण माना जाता है। डेटाबेस में शामिल यह पैटर्न दुनिया भर के वैज्ञानिकों, शोध संस्थानों, प्रयोगशालाओं और उद्योगों को विभिन्न पदार्थों की पहचान और उनके विश्लेषण में मदद करेगा।

चुनिंदा भारतीय वैज्ञानिकों में मिली जगह

प्रो. नीतू अहलावत उन चुनिंदा भारतीय रिसर्च वैज्ञानिकों के समूह में शामिल हो गई हैं, जिनके प्रयोगात्मक एक्सआरडी पैटर्न को पिछले वर्षों में आईसीडीडी के प्रतिष्ठित डेटाबेस में शामिल करने के लिए स्वीकार किया गया है। गुजविप्रैवि के लिए यह उपलब्धि इसीलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे विश्वविद्यालय की सामग्री विज्ञान में बढ़ती शोध क्षमता और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय में बढ़ती स्वीकार्यता सामने आती है। कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने भी प्रो. नीतू अहलावत और उनकी टीम के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर प्रो. नीतू अहलावत के साथ शोधार्थी दीपा, कनिष्ठा सांगवान, पूजा, दीपक सैनी, आरती और अचला रानी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की अंतरराष्ट्रीय पहचान को और मजबूत करेगी। उन्होंने कहा कि इस तरह के उच्चस्तरीय शोध से

विश्वविद्यालय के अन्य शिक्षकों और शोधार्थियों को भी विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।



आदमपुर। जवाहर नगर क्षेत्र में रेलवे द्वारा बनाई जा रही दीवार से बंद होता रास्ता।।

आदमपुर में रेलवे की दीवार बनने से 10 हजार लोग झेल रहे परेशानी

हरिभूमि न्यूज

आदमपुर के जवाहर नगर क्षेत्र में प्लेटफॉर्म निर्माण के बाद अब रेलवे द्वारा दीवार का निर्माण कराया जा रहा है। रेलवे के इस कदम से करीब 10,000 स्थानीय निवासियों सहित हजारों छात्रों, रेल यात्रियों, दुकानदारों, महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों के सामने आवागमन का बड़ा संकट खड़ा हो गया है। रेलवे लाइन शहर के बीचों-बीच गुजरती है, जिससे आदमपुर दो भागों में बंटा हुआ है। जवाहर नगर की तरफ कॉलेज, आईटीआई, फार्मसी कॉलेज, महिला आईटीआई और कई निजी स्कूल स्थित हैं। वहीं दूसरी ओर आदमपुर का मुख्य बाजार, थाना, तहसील, बीडीपीओ कार्यालय, मार्केट कमेटी, बिजली-पानी कार्यालय, फूड सप्लाय विभाग, कन्या विद्यालय और सभी प्रमुख

बार-बार गुहार लगाने के बाद भी समाधान नहीं

जवाहर नगर के सरपंच कुलदीप ज्याणी, पंच सुनील कुमार, गायत्री देवी, रेखा रानी, प्रकाश, नरेश शर्मा, रमेश मल्होत्रा और हैप्पी चोपड़ा ने बताया कि इस समस्या को लेकर वे हरियाणा के मुख्यमंत्री, पूर्व विधायक कुलदीप बिश्नोई, मन्दा बिश्नोई, सांसद जयप्रकाश तथा जिला उपায়ुक्त व एसडीएम से भी मिल चुके हैं, लेकिन अब तक कोई समाधान नहीं निकला है। प्रशासन और रेलवे से मुख्य मांग स्थानीय निवासियों और प्रतिनिधियों ने रेलवे विभाग से मांग की है कि निर्माणाधीन पैदलयात्री पुल का विस्तार लाइन पार जवाहर नगर क्षेत्र तक किया जाए। बैंक मौजूद हैं। दैनिक दिनचर्या पर पड़ा सीधा असर दीवार बनने से सभी सीधे रास्ते बंद हो गए हैं। अब लोगों को करीब 1 किलोमीटर घूमकर जाना पड़ेगा।

सफाई कर्मियों की हड़ताल जारी, शहर में प्रदर्शन

विधायक जस्सी पेटवाड़ को सौंपा मांग पत्र
नियमित भर्ती, ठेका प्रथा खत्म करने की मांग

हरिभूमि न्यूज

हड़ताली सफाई कर्मचारियों ने शनिवार को अपनी मांगों को लेकर शहर में प्रदर्शन करते हुए कांग्रेस विधायक जस्सी पेटवाड़ को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने सरकार के समक्ष अपनी लंबित मांगों को मजबूती से उठाने की अपील की। इस अवसर पर पूर्व मंत्री गीता भुक्कल सहित कई अन्य कांग्रेस नेता मौजूद रहे। विधायक को सौंपे गए ज्ञापन में कर्मचारियों ने पालिका परिषद, नगर निगम और अग्निशमन विभाग के सभी कर्मचारियों को स्थायी करने की मांग की। उन्होंने



हांसी। अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपते सफाई कर्मचारी फोटो: हरिभूमि

सफाई और सीवर व्यवस्था से ठेका प्रथा समाप्त करने तथा इन विभागों में नियमित भर्ती शुरू करने की भी अपील की। ठेका प्रथा समाप्त किए जाने की मांग कर्मचारियों ने बताया कि सफाई व्यवस्था शहर की महत्वपूर्ण सेवाओं में से एक है। इसके बावजूद बड़ी संख्या में कर्मचारी ठेका प्रथा के तहत काम कर रहे हैं। उन्होंने सरकार से ठेका

प्रथा समाप्त कर कर्मचारियों को स्थायी रोजगार देने की मांग दोहराई। इसके अतिरिक्त, अग्निशमन विभाग में ड्यूटी के दौरान जान गंवाने वाले रणबीर और भवी चंद के आश्रितों को स्थायी नौकरी देने की मांग की गई। कर्मचारियों ने दोनों परिवारों को 50-50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की भी अपील की।

हर ओर दिख रहे कूड़े के ढेर

हिसार। नगर पालिका कर्मचारी संघ के हड़ताल शनिवार को 17वें दिन भी जारी रही। कर्मचारियों की बेमियादी हड़ताल के चलते शहर के हालात बंद से बदतर होते जा रहे हैं। शहर में जहां देखे, वहीं कूड़े के ढेर लगे हैं। शहर के कई हिस्सों में कचरे के ढेरों में आग लगाने के कारण आसपास में रहने वाले लोगों का जीना दूसर हो गया है। पिछले 17 दिनों से जारी हड़ताल के चलते शहर से करीब 3500 टन कचरे का उठान नहीं हो पाया है। निगम प्रशासन की तरफ से कुछ स्थानों पर कचरा उठाने के प्रयास भी किए जा चुके हैं, लेकिन विरोध के चलते कामकाजी होय नहीं लगी है। संघ के इकाई प्रधान सुरेंद्र उर्फ गोलू ने कहा कि सरकार द्वारा 13 मई को उनकी मांगों को लेकर समझौता किया गया था, लेकिन समझौते में शामिल मांगों को अभी तक पूरी तरह लागू नहीं किया गया है।

मौलिक विचारों और नवाचारों को कानूनी संरक्षण देना जरूरी : डॉ. शशिकला यादव

राजकीय महिला कॉलेज में बौद्धिक संपदा अधिकार पर हुआ व्याख्यान

हरिभूमि न्यूज

राजकीय महिला महाविद्यालय में बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने के उद्देश्य से ‘नेविगेटिंग इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट: लॉ, इनोवेशन एंड प्रोटेक्शन’ विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली की लॉ छात्रा कसक पाहुजा ने मुख्य वक्ता के रूप में छात्राओं को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन प्लेसमेंट



हिसार। कार्यक्रम में बौद्धिक संपदा विषय पर जानकारी देते वक्ता। फोटो: हरिभूमि

प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. वसुंधरा ने किया। महाविद्यालय की उप-प्राचार्या डॉ. शशि कला यादव ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आज के दौर में केवल नए विचार और नवाचार करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें कानूनी संरक्षण प्रदान करना भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने छात्राओं से अपने मौलिक विचारों, रचनात्मक

क्षमताओं और नवाचारों को पहचानने तथा बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता कसक पाहुजा ने बौद्धिक संपदा अधिकारों की अवधारणा को सरल एवं व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझाया। आईपीएम प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. हर्षा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

डॉ. पुनीत इंदौरा बने राज्य स्तरीय दिशा निगरानी समिति के गैर-सरकारी सदस्य

हिसार। राज्यपाल प्रो. अशीम कुमार घोष ने राज्य स्तरीय दिशा निगरानी समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) के जलन में संशोधन किया है। संशोधित समिति में पटेल नगर निवासी डॉ. पुनीत इंदौरा को गैर-सरकारी सदस्य नियुक्त किया गया है। सांसद नवीन जिंदल भी इस समिति के सदस्य हैं। राज्य स्तरीय दिशा समिति का उद्देश्य केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों की योजनाओं के क्रियान्वयन में खर्च की गुणवत्ता सुनिश्चित करना, विकास कार्यों में बेहतर तालमेल



स्थापित करना तथा योजनाओं की प्रभावी निगरानी करना है। समिति विभिन्न विकास कार्यक्रमों के बीच समन्वय एवं एकीकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ निर्धारित समय में अधिक प्रभावी परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रदेश में मौजूद असमानताओं की भी समीक्षा करेगी। समिति के अध्यक्ष हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी हैं। डॉ. पुनीत इंदौरा दिशा केंद्रों की सतर्कता निगरानी के साथ-साथ मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में होने वाली प्रदेश स्तरीय बैठकों में भी भाग लेंगे।

ऑक्सफोर्ड स्कूल का कानूनी साक्षरता स्पर्धा में रहा दबदबा



उकलाना। शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी। फोटो: हरिभूमि

उकलाना। पीएम श्री मॉडल स्कूल, उकलाना मंडी में आयोजित ब्लॉक स्तरीय कानूनी साक्षरता प्रतियोगिता में ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान हासिल किया। कक्षा 10वीं के अनमोल रतन ने कविता प्रस्तुति में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा 11वीं की लिजा ने भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय, कक्षा 12वीं की गीताजलि ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन में द्वितीय तथा सुशर्वा ने डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रतियोगिता में तृतीय स्थान हासिल किया। प्रधानाचार्य भुवनेश भारद्वाज ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि कानूनी साक्षरता विद्यार्थियों को अपने अधिकारों, कर्तव्यों और कानूनों के प्रति जागरूक बनाती है। विद्यालय निदेशक डॉ. सतीश भारती ने विजेता विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई दी।

जिला स्तरीय विज्ञान सेमिनार में छात्र निमित्त को तृतीय स्थान

नारनौद। जिला स्तरीय विज्ञान सेमिनार प्रतियोगिता में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खांडा खेड़ी के प्रतिभावान छात्र निमित्त ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया। निमित्त ने भारतीय उर्जा परिदृश्य 2047 विषय पर प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक प्रस्तुति देते हुए अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक सोच और विषय की गहरी समझ का परिचय दिया। उनकी प्रस्तुति ने निर्णायक मंडल को प्रभावित किया और उन्हें जिले में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। विद्यालय के प्राचार्य प्रवीण कुमार व विज्ञान अध्यापक राजकुमार ने निमित्त को हार्दिक बधाई दी है।



नारनौद। छात्र को सम्मानित करते हुए स्कूल के प्रिंसिपल और स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

हांसी प्राइवेट स्कूल संघ ने शिक्षा मंत्री को सौंपा ज्ञापन



हांसी। प्राइवेट स्कूल संघ के प्रतिनिधिमंडल ने विधायक विनोद भयाना की अध्यक्षता में कैबिनेट शिक्षा मंत्री महीपाल दांडा से मुलाकात कर निजी स्कूलों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा। संघ प्रधान रविंद्र अत्री देंदेरी ने बताया कि पिछले कुछ समय से स्कूलों का एमआईएस पोर्टल बंद है। शिक्षा विभाग द्वारा इसे केवल पांच दिन के लिए र्पोटर्स फंड के कार्य के लिए खोला गया है, जिसे संघ ने अन्यायपूर्ण बताया। रविंद्र अत्री ने कहा कि हांसी संघ के आह्वान पर प्रदेशभर की विभिन्न निजी स्कूल यूनिजनों ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में यह मांग उठाई थी। उन्होंने कहा कि स्कूलों के लिए एमआईएस पोर्टल पर निजी कार्यों की अपेक्षा शिक्षा विभाग से संबंधित कार्य अधिक होते हैं। ऐसे में पोर्टल को सीमित अवधि के लिए खोलना स्कूल संचालकों के लिए परेशानी का कारण बन रहा है। उन्होंने मांग की कि विभागीय कार्यों को ध्यान में रखते हुए पोर्टल को बिना किसी समय सीमा के पूर्ण रूप से खोला जाए। इस अवसर पर मुख्य संरक्षक अनिल कुमार, प्रधान रविंद्र अत्री, संरक्षक सतीश वर्मा, उपप्रधान मनोज आहुजा, सलाहकार तिलक राम महेंद्रवर्मा तथा राजबीर वर्मा सहित प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

डीएवी पब्लिक स्कूल में हुआ पौधरोपण

हिसार। कैमरी रोड स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल में पेड़ लगाओ-पर्यावरण बचाओ विषय पर विशेष पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ विद्यालय की मैनेजर अनोता वड़ेरा के पौधरोपण से हुआ। इसके पश्चात विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर विद्यालय परिसर में कई पौधे लगाए।

गैंगस्टर पानू हत्या मामले में दूसरा आरोपी काबू

हिसार। पुलिस ने दो दिन पहले अदालत परिसर में हुई फायरिंग व उसमें गैंगस्टर विनोद पानू की मौत मामले में दूसरे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान अजय के रूप में हुई है। पुलिस को शनिवार को काबू किया गया है। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। पुलिस के अनुसार पूछताछ करके ये पता लगाया जाएगा कि इस साजिश में और कौन कौन शामिल है।



हांसी। आधुनिक कृषि यंत्रों के लिए ड्रा निकालते एडीसी व अन्य अधिकारी।

गया। इस प्रक्रिया के दौरान सुपर सीडर मशीन के लिए प्राप्त कुल 596 आवेदनों में से 102 लाभार्थियों का चयन किया गया। इसी प्रकार बेलर मशीन के लिए प्राप्त 44 आवेदनों में से 7 लाभार्थियों का चयन किया गया। इस प्रकार दोनों कृषि यंत्रों के लिए कुल 109 किसानों का चयन किया गया है। विभाग की ओर से बताया गया कि योजना के तहत निर्धारित लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कुल लक्ष्य के

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर सहायक कृषि अभियंता गोपीराम सांगवान, कृषि विज्ञान केंद्र से सीनियर कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेन्द्र, एसडीओ डॉ. रविंद्र, सहायक कृषि अभियंता डॉ. गोपीराम सांगवान, एलडीएम पीएनबी राजेश जिंदल सहित किसान उपस्थित रहे।

30 प्रतिशत आवेदकों को प्रतीक्षा सूची में भी रखा गया है। इससे चयनित लाभार्थियों में से किसी के द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के तहत लाभ प्राप्त न करने की स्थिति में प्रतीक्षा सूची में शामिल पात्र आवेदकों को नियमानुसार अवसर प्रदान किया जा सकेगा।

खबर संक्षेप

7.44 ग्राम चिट्ठा के साथ एक आरोपित काबू

हांसी। पुलिस की अपराध शाखा - 2 की टीम ने 7.44 ग्राम चिट्ठा सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान इंद्रा कॉलोनी निवासी रिकू के रूप में हुई है। उप निरीक्षक फिरोज खान ने बताया कि सीआईए-2 हांसी की पुलिस टीम को गश्त के दौरान सूचना मिली कि मोटरसाइकिल सवार एक युवक नशीला पदार्थ लेकर अंटो मार्केट हांसी की तरफ आने वाला है। सूचना के आधार पर नाकाबंदी कर शक के आधार पर मोटरसाइकिल सवार युवक को काबू कर नियमानुसार कार्रवाई करते हुए राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में तलाशी ली गई तो आरोपी के कब्जे से 7.44 ग्राम चिट्ठा बरामद हुआ।

नकदी व सट्टा पर्चियों के साथ युवक को पकड़ा नारनौंद। सीआईए की टीम ने सट्टा खाईवाली करते गांव राजथल निवासी शीशन को 8100 रुपये की नकदी व सट्टा पर्चियों सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए नारनौंद की पुलिस टीम अपराधों की रोकथाम एवं संदिग्ध गतिविधियों की जांच के लिए क्षेत्र में गश्त पर थी। इसी दौरान पुलिस टीम को सूचना मिली कि हांसी-जींद रोड के नजदीक गांव राजथल में एक युवक सट्टा खाईवाली का काम कर रहा है। पुलिस टीम ने कार्रवाई के दौरान एक कर्मचारी को बोगस ग्राहक बनाकर सट्टा लगाने के लिए भेजा। आरोपित युवक द्वारा सट्टे का नंबर लिखकर पर्ची तैयार की गई तथा सट्टे की रकम ली गई। इसके बाद पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर आरोपित को काबू कर लिया।

कुलपति ने किया पोस्टर का विमोचन
हिसार। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल तकनीक से तेजी से बदलते कारोबारी परिवेश पर मंथन के लिए यहां के गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में अगले वर्ष चार व पांच फरवरी को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग के सौजन्य से होने वाले 'एआई, नवाचार एवं डिजिटल व्यावसायिक रूपांतरण पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीएआईडीबीटी-2027)' का आयोजन हाइब्रिड मोड में होगा। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने सम्मेलन के पोस्टर का विमोचन किया। सम्मेलन का आयोजन इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई), हिसार शाखा और आईसीएआई-दुबई (यूएई) चैप्टर के अकादमिक एवं व्यावसायिक सहयोग से किया जा रहा है।

चार लाख ठगने में चौथा आरोपी किया गिरफ्तार
हिसार। पुलिस की वर्दी पहनकर चार लाख रुपये की ठगी करने के मामले में उकलाना थाना पुलिस ने चौथे आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान हसनगढ़ गांव निवासी राहुल के रूप में हुई है। मामले में अब तक चार आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जबकि फरार आरोपियों की तलाश और ठगी की रकम की बरामदगी के लिए पुलिस टीमें जुटी हुई हैं। पुलिस के अनुसार, भिवानी के विद्या नगर निवासी साहिल की जान-पहचान हसनगढ़ निवासी आजाद से हुई थी। आजाद ने कम रकम लगाकर तीन गुना रकम देने का लालच दिया।

हरिद्वार में सावन जोत व भंडारे के लिए श्रद्धालुओं से भरी बस रवाना

हिसार। शिव शक्ति सेवा समिति के तत्वाधान में हरिद्वार में लगाई जाने वाली सावन जोत व 28वें विशाल भंडारे के लिए राजगुरु मार्किट से श्रद्धालुओं से भरी बस रवाना हुई। समिति के प्रधान कृष्ण कालड़ा ने बताया कि समाजसेवी प्रतीक बंसल ने आरती के बाद झंडी दिखाकर बस को रवाना किया। समिति की ओर से प्रतीक बंसल को पटका पहनाकर व समिति हिन्दू देकर सम्मानित किया गया। महंत तुरंतपुरी महाराज के सान्निध्य में समिति के संरक्षक सुरेश चंद जैन सिराये वाले, महेंद्र जटासरा, विनोद सिंगल, एनके गोयल, बंटी गोयल, अशोक सिंगल, राजकुमार भाटिया हितेश अडवाल की उपस्थिति में सभी बस यात्रियों को शुभकामनाएं दी गई।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

हिसार

हिसार में मंहगाई का डबल अटैक, चीनी-प्याज के दाम 60 के पार

प्याज ने निकाले आंसू, बाजार में सब्जियां बिक रहीं दोगुने रेट पर, एक पखवाड़े में बिगड़ा रसोई का बजट, गृहणियां दिख रही मायूस

हरिभूमि न्यूज

हिसार

आवक आधी, मांग अधिक

हिसार जिले की मंडियों में मुख्य रूप से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से प्याज की सप्लाई होती है। सब्जी मंडी के व्यापारियों के अनुसार दाम बढ़ने के मुख्य कारण आपूर्ति में भारी गिरावट है। एशिया की सबसे बड़ी प्याज मंडी, महाराष्ट्र के लासलगांव में पिछले दो-तीन सप्ताह पहले रोजाना औसतन 15 हजार क्विंटल प्याज आ रहा था, जो अब घटकर लगभग आधा यानी 8 हजार क्विंटल प्रतिदिन रह गया है। दक्षिण भारत से आवक घटने और खरीफ फसलों की बुआई में किसानों के व्यस्त होने से मंडियों में प्याज की किल्लत हो गई है।

पहले और अब

खाद्य सामग्री	पहले	अब
चीनी	45-50	65-70
प्याज	30-40	60

प्रति किलोग्राम रुपये

प्याज का ‘पावर हाउस’ है नासिक का लासलगांव

महाराष्ट्र देश का कुल 37 फीसदी प्याज उत्पादित करता है। नासिक का लासलगांव क्षेत्र अपनी काली मिट्टी और अनुकूल वातावरण के कारण प्रीमियम लाल प्याज की पैदावार के लिए जाना जाता है। यहीं की मंडी में लगने वाली बोलियों से देशभर में प्याज के दाम तय होते हैं। इसके अलावा यह क्षेत्र अंगूर उत्पादन और राष्ट्रीय प्याज एवं लहसुन अनुसंधान संस्थान के लिए भी देशभर में प्रसिद्ध है।

भारी बारिश और बाढ़ से फसल को नुकसान

प्याज उत्पादक क्षेत्रों में भारी बारिश और बाढ़ से फसल को काफी नुकसान पहुंचा है। लासलगांव मंडी में बीते 15 दिनों में प्याज के थोक भाव 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ चुके हैं। उत्तम गुणवत्ता वाला प्याज विदेशों में निर्यात होने से भी घरेलू बाजार में कीमते चढ़ रही हैं। व्यापारियों की मानना है कि अभी प्याज में तेजी का रुख रहेगा। नई फसल आने पर ही प्याज के दाम नीचे आने के आसार हैं।

भकलाना की बेटी ने अंडर-20 विश्व चैंपियनशिप के 72 किलो वर्ग में दिखाया दमखम, परिवार में जश्न

विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में तनु ने रजत पदक किया अपने नाम

पदक विजेता खिलाड़ी तनु शर्मा।

है। लगातार मेहनत और खेल के प्रति समर्पण के दम पर तनु ने यह साबित कर दिया कि छोटे गांवों की बेटियां भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का परचम लहरा सकती हैं।

हिसार में निखरी प्रतिभा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनाई पहचान

कुश्ती के शुरूआती प्रशिक्षण के बाद हिसार स्पोर्ट्स सेंटर के कोच

सातवीं कक्षा से शुरू की कुश्ती

तनु के मामा योगेश शर्मा ने बताया कि तनु को बचपन से ही खेलों में खास रुचि थी। उसकी प्रतिभा और कुश्ती के प्रति लगाव को देखते हुए उसके चाचा एवं भारतीय सेना से सेवानिवृत्त नरेंद्र

शर्मा ने उसे कुश्ती के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद तनु ने सातवीं कक्षा से कोच संजय सिहाग के मार्गदर्शन में कुश्ती का प्रशिक्षण शुरू किया।

पिता संस्कृत अध्यापक, मां गृहिणी

तनु के पिता वीरेंद्र शास्त्री सरकारी विद्यालय में संस्कृत अध्यापक हैं, जबकि उनकी माता सुमन लता गृहिणी हैं। परिवार ने तनु के खेल सफर में लगातार उसका हौसला बढ़ाया। अब विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने के बाद परिवार के साथ-साथ गांव के लोग भी उसकी उपलब्धि पर गर्व महसूस कर रहे हैं।

दादा बोले, अब ओलंपिक पदक का सपना

तनु के दादा मंगत राम शर्मा ने खुशी जताते हुए कहा कि तनु ने कम उम्र में ही बड़ी उपलब्धि हासिल की है। उन्हें पूरा विश्वास है कि वह आने वाले समय में और बेहतर प्रदर्शन करेगी और ओलंपिक में पदक जीतकर देश का नाम रोशन करेगी।

सुनील ढुल और राजेश नांदल ने तनु की प्रतिभा को तराशने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नियमित अभ्यास, कड़ी मेहनत और

अनुशासन के दम पर तनु ने धीरे-धीरे अपनी पहचान बनाई और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए खुद को तैयार किया।

महाराज अरूट के नाम पर मुख्य चौक का नाम रखने की मांग

पंजाबी खत्री सुरक्षा मंच ने मेयर को सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ►►हिसार

पंजाबी अरोड़ा खत्री समाज के प्रेरणास्रोत महाराज अरूट के नाम पर हिसार शहर के किसी प्रमुख चौक का नाम रखने की मांग पर पंजाबी खत्री सुरक्षा मंच ने मेयर प्रवीण पोपली को ज्ञापन सौंपा। मंच ने कहा कि महाराज अरूट के गौरवशाली इतिहास और समाज में उनके योगदान को सम्मान देने के लिए शहर के किसी मुख्य चौक का नाम उनके नाम पर रखा जाना चाहिए। राष्ट्रीय संयोजक विक्रांत धमीजा के नेतृत्व में दिए गए ज्ञापन की अध्यक्षता जिला संयोजक विजय राजपाल ने की। विक्रांत धमीजा ने कहा कि

हिसार। मेयर को ज्ञापन सौंपते पदाधिकारी व सदस्य।

फोटो: हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर डॉ. हेमंत आहुजा, शिक्षाविद् अनिल कुकरेजा, सौरभ पपनेजा, विजय कक्कड़, प्रदीप शर्मा, विजय, आशु मैया, सुभाष चिलाना,

पंजाबी खत्री सुरक्षा मंच की ओर से अब पूरे हरियाणा में अभियान चलाया जाएगा। अगले एक सप्ताह में प्रदेश के प्रत्येक शहर में प्रशासन एवं संबंधित अधिकारियों को ज्ञापन देकर महाराज अरूट के नाम पर प्रमुख

समीर भाटिया, पारुल राजपाल, प्रीतम कामरा, सुनील मक्कड़, सुनील सरदाना सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

चौक का नाम रखने की मांग की जाएगी। महाराज अरूट के गौरवशाली इतिहास और समाज में उनके योगदान को सम्मान देने के लिए शहर के किसी मुख्य चौक का नाम उनके नाम पर रखा जाना चाहिए।

उमरा व गढ़ी में चलाया विशेष पौधरोपण अभियान

हिसार। अभियान के तहत पौधरोपण करते अधिकारी व ग्रामीण।

हरिभूमि न्यूज ►►हिसार

हिसार। गांव उमरा और गढ़ी में विशेष पौधरोपण एवं पौधे वितरण का अभियान चलाया गया। अभियान के तहत दोनों गांवों में विभिन्न प्रकार के फलदार और छायादार पौधे लगाए गए। ग्रामीणों को पौधे वितरित कर उन्हें पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित बनाने का आहवान किया गया। इस अभियान का आयोजन भारतीय स्टेट बैंक व्यवसाय कार्यालय के

राशन डिपो से गेहूं चोरी के आरोप में दो काबू

हिसार। गोरखी गांव स्थित राशन डिपो से सरकारी राशन के दो कट्टे गेहूं चोरी करने के मामले में बालसमंद चौकी पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान न्योली कलां निवासी मोहन उर्फ मोनू व न्योली खुद निवासी संदीप उर्फ सोमबीर रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर चोरी किए गए दोनों कट्टे गेहूं, जिनका वजन करीब 100 किलोग्राम है, बरामद कर लिए हैं। दोनों आरोपियों को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार इस संबंध में गोरखी गांव निवासी सुरेन्द्र कुमार की शिकायत पर सदर थाना में मामला दर्ज किया गया था। शिकायत के मुताबिक, गांव के राशन डिपो पर सरकारी गेहूं के कट्टे उतारे जा रहे थे।

हरिभूमि 10

आपसी संवाद का बदलता मिजाज खो ना जाए रिश्तों की मिठास



कवर स्टोरी
रशीधरा भटनागर

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, मनुष्य के भीतर से दूसरे मनुष्य तक जाने वाली वह महीन डोर है, जिसमें समय, संस्कार, स्मृतियाँ और संबंध एक साथ बंधे रहते हैं। किसी समाज की भाषा को सुनकर उसके समय की धड़कन पहचानी जा सकती है। शब्द बदलते हैं तो केवल शब्द नहीं बदलते, उनके साथ हमारे व्यवहार, हमारी निकटताएँ और कभी-कभी हमारी संवेदनाएँ भी अपना रूप बदल लेती हैं।

भाषा में होता था माधुर्य

एक समय था, जब मोहल्ला एक परिवार जैसा होता था और मोहल्ले की अपनी एक लोकभाषा हुआ करती थी। वह किसी व्याकरण की पुस्तक में नहीं मिलती थी, फिर भी उसमें जीवन का पूरा व्याकरण समाया होता था। पड़ोस की चाची, गली के काका, सामने वाले घर की दादी, दूध वाले भैया, डाकिया चाचा। रक्त-संबंध न होते हुए भी भाषा ने सबको रिश्तों में बांध रखा था। किसी के घर से पकवान निकला तो कटोरी पड़ोस में पहुँची। किसी के यहां कोई दुःख-परेशानी आई तो अगले बरताने से आवाज आती, ‘कुछ चाहिए तो बताना’। किसी बुजुर्ग को देखते ही बच्चे का स्वर अपने आप नीचे हो जाता था। ‘आप’, ‘आइए’, ‘बैठिए’, ‘खाइए’, ‘कैसे हैं?...’ ये केवल शब्द नहीं बल्कि बुझने के अस्तित्व को स्वीकार करने के संस्कार हुआ करते थे। मोहल्ले की उस भाषा में एक सहज माधुर्य था। उसमें आत्मीयता थी, पर आत्मीयता की भी एक मर्यादा थी। मजाक था, मगर अपमान नहीं। असहमति थी,

मगर संबोधन में सम्मान बचा रहता था। आज मोहल्ले सिकुड़कर अपार्टमेंट हो गए हैं और चौपाल स्क्रीन पर चली गई है। पड़ोसी का चेहरा कई बार वर्षों तक दिखाई नहीं देता, जबकि दूर देश में रहने वाला कोई डिजिटल मित्र प्रतिदिन बातचीत का हिस्सा बना रहता है। भाषा भी उसी के साथ बदल गई है।

नई पीढ़ी की बेलाग भाषा

आज जब हम नई पीढ़ी की भाषा की बात करते हैं, तो चर्चा केवल ‘हाय’, ‘हेलो’ ‘ओके’, ‘कूल’ ‘ब्रो’ या डिजिटल संक्षिप्तियों तक सीमित नहीं रह सकती है। इस भाषा का एक दूसरा, अधिक चिंताजनक पक्ष है बातचीत में बढ़ती बेलाग अशिष्टता, गाली-गलौज और अपशब्दों का सहज इस्तेमाल।

लेकिन इसे केवल ‘आज के बच्चों के संस्कार खराब हैं’ कहकर समझ लेना समस्या को बहुत छोटा कर देना होगा। आज युवाओं की



बातचीत में अपशब्दों का इस्तेमाल कई संदर्भों में सामान्य होता दिखाई देता है। शोध यह संकेत देते हैं कि युवाओं में अपशब्दों का प्रयोग केवल ‘असंस्कारी’ होने का परिणाम नहीं होता। कभी यह भावनाओं को तीव्रता से व्यक्त करने, कभी समूह में स्वीकार्यता पाने और कभी अपनी बात

घर-परिवार हो, पड़ोसी, मित्र-मंडली, सहकर्मी हों या रिश्तेदार, सभी से संबंध, हमारे बातचीत के तरीके और शब्दों पर निर्भर करते हैं। समय के साथ शब्द, संबोधन, भाषा की चाल बदलना स्वाभाविक है, लेकिन भाषा से यदि सम्मान और मर्यादा का भाव कम होने लगे तो रिश्तों की ऊष्मा, उसकी मिठास खोने का डर मंडराने लगता है। ऐसे में हम सभी को सजग होने की जरूरत है।



को अधिक प्रभावशाली बनाने का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी बात खुलकर रखने के बहुत अधिक अवसर दिए हैं और इसके साथ अशिष्ट भाषा की दुर्यता भी बढ़ी है। यानी समस्या केवल शब्दों की नहीं, शब्दों के सामान्य हो जाने की है। दरअसल, जब किसी शब्द को बार-बार सुना जाता है, तो उसका चौंकाने वाला प्रभाव कम होने लगता है। जो कल असभ्य माना जाता था, वह आज मजाक का हिस्सा बन जाता है। और जो मजाक में कहा गया था, वह धीरे-धीरे रोजमर्रा की भाषा में प्रवेश कर जाता है।

समझना होगा महत्वपूर्ण अंतर

हर अपशब्द हिंसा नहीं है और हर अपशब्द किसी व्यक्ति को अपमानित करने के लिए नहीं बोला जाता। भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि लोग कभी-कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भावनात्मक तीव्रता, तनाव या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए करते हैं। लेकिन किसी की



गरिमा को चोट पहुंचाने वाली गाली और मित्रों के बीच भावनात्मक विस्मय व्यक्त करने वाला अपशब्द एक ही बात नहीं है। यहीं भाषा की नैतिकता का प्रश्न खड़ा होता है। आखिर यह भाषा आई कहां से? इस बदलाव के पीछे कई परतें हैं।

डिजिटल दुनिया: सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, छोटे वीडियो और मीम संस्कृति में तीखी, उत्तेजक और चौंकाने वाली भाषा अकसर मनोरंजन का हिस्सा बन जाती है।

साधियों का प्रभाव: किशोरावस्था में समूह से जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोई शब्द मित्र-मंडली में सामान्य है तो उसे न बोलना कई बार ‘अलग’ दिखाई देना हो सकता है। इसलिए युवा भाषा केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

घर की भाषा: हम अकसर बच्चों की भाषा पर अंगुली उठाते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाषा सीखने की पहली पाठशाला घर है। यदि घर में क्रोध का पहला उतर गाली है, तो बच्चे के लिए गाली केवल निषिद्ध नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

ध्यान रखने की प्रवृत्ति: बेलाग भाषा कई बार ‘कूल’, ‘बोल्ड’ या ‘बेबाक’ दिखने का माध्यम बन जाती है। इसीलिए कुछ युवा जान-बूझकर ऐसी भाषा चुनते हैं। **संवाद का घटता धैर्य:** जब बातचीत छोटी होती जाती है, तो भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों की जगह तीव्र शब्द लेने लगते हैं। इन सभी कारणों को समझने के बाद विकृत होती भाषा के लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि भाषा का यह परिवर्तन केवल युवाओं ने पैदा नहीं किया है। उन्हें यह भाषा समाज ने दी है।

भाषा में बनी रहे मधुरता-मर्यादा

हमें पुरानी भाषा को हूबहू वापस लाने की आवश्यकता नहीं है। नई पीढ़ी को अपनी भाषा होगी ही। जरूरत केवल इतनी है कि आधुनिकता के साथ माधुर्य भी रहे और बेबाकी के साथ मर्यादा भी। प्रश्न शब्द का नहीं, उसके पीछे मौजूद मन का है। हम न भूलें कि शब्दों में अद्भुत शक्ति होती है। वे रिश्तों में मिठास घोल सकते हैं तो हमेशा के लिए खटास भी भर सकते हैं। *

मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाएं भाई-बहन का भावनात्मक संबल

हर परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अनोखा और प्यारा होता है। उम्र के हर दौर में भाई-बहन का एक-दूसरे को दिया जाने वाला भावनात्मक संबल, मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। इस बारे में आप विस्तार से जरूर जानना चाहेंगे।

पॉजिटिव इफेक्ट नैसी गुप्ता

बदली जीवनशैली, बढ़ता काम का दबाव, सोशल मीडिया की तुलना और अकेलेपन की भावना आज मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण बन चुके हैं। ऐसे समय में परिवार का भावनात्मक सहयोग, हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत साबित होता है। परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अलग और प्यारा होता है, क्योंकि यह केवल बचपन की यादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर भावनात्मक सुरक्षा, भरोसा और अपनापन भी देता है। भाई-बहन का रिश्ता दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भावनात्मक सुरक्षा: बचपन के बाद टीनएज, यंगएज और मिडएज में भाई-बहन दोस्त जैसे हो जाते हैं, जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं साझा कर लेते हैं। जब जीवन में तनाव, असफलता या किसी तरह की परेशानी आती है, तो भरोसेमंद भाई या बहन का साथ मानसिक बोझ को काफी हद तक कम कर देता है। यह भावनात्मक सुरक्षा, चिंता और अकेलेपन की भावना को घटाने में मदद करती है।

तनाव होता है कम: मानसिक तनाव के दौरान किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना काफी राहत देता है। भाई-बहन एक-दूसरे की परिस्थितियों, स्वभाव और पारिवारिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए वे बिना जज किए सुनते हैं और व्यावहारिक सलाह भी देते हैं। यह सहयोग तनाव से बाहर निकलने में सहायक हो सकता है। **अकेलापन महसूस हो कम:** आज के समय में अनेक युवक-युवतियां, परिवार से दूर रहकर पढ़ाई



या नौकरी करते हैं। ऐसे में अकेलेपन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में यदि भाई-बहन के साथ नियमित बातचीत होती रहे, तो दूरी के बावजूद भावनात्मक जुड़ाव कायम रहता है। फोन कॉल, वीडियो कॉल या संदेश भी मानसिक सुकून देने का काम करते हैं। **बढ़ता है आत्मविश्वास:** हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे पल आते हैं जब उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। ऐसे समय में भाई या बहन का प्रोत्साहन आत्मविश्वास को दोबारा मजबूत कर सकता है। बचपन से एक-दूसरे की खूबियाँ और कमजोरियों को जानने के कारण, उनका उत्साहवर्धन अधिक प्रभावी महसूस होता है।

कठिन समय में सहारा: मानसिक स्वास्थ्य केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है। बीमारी, आर्थिक परेशानी या पारिवारिक संकट के समय भाई-बहन, भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ व्यावहारिक

मदद भी करते हैं। जिम्मेदारियां बांटना, निर्णय लेने में साथ देना और समस्याओं का समाधान ढूँढ़ना मानसिक दबाव को कम करने में मदद करता है। **मिलती है सकारात्मक ऊर्जा:** बचपन की सुखद यादें मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। भाई-बहन के साथ बिताए गए खेल, त्योहार, शरारतें और पारिवारिक अनुभव कठिन समय में भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस कराते हैं। कहा जा सकता है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाला भावनात्मक सहारा भी है। बदलते समय में जब मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं, तब यह रिश्ता हमें अपनापन और आत्मविश्वास देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। * (क्लिनिकल साइकोलाजिस्ट निर्मल वर्मा से बातचीत पर आधारित)

रिश्ता बनाए रखें मजबूत

भाई-बहन के बीच केवल रिश्ता होना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि मजबूती बनाए रखने के लिए उसे समय देना भी जरूरी है। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नियमित बातचीत करें, एक-दूसरे की उपलब्धियों की सराहना करें, मतभेद होने पर संवाद बनाए रखें और छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक मन में न रखें। स्वस्थ संवाद रिश्ते को मजबूत बनाता है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। इसके साथ ही रक्षाबंधन, जन्मदिन या परिवार के छोटे-छोटे समारोह, भाई-बहन को फिर से करीब लाने का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों को मिस न करें। इस दौरान साथ समय बिताना, पुरानी यादें साझा करना, उत्साह के पल बिताना और एक-दूसरे का हाल-चाल जानना भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है। कई परिवारों में भाई-बहनों के बीच तुलना की जाती है, जिससे तनाव, ईर्ष्या और आत्मसमझन से जुड़ी समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। इसके बजाय एक-दूसरे की सफलता का सम्मान करना और शुभिकल समय में सहयोग देना रिश्ते को अधिक सकारात्मक बनाता है। भाई-बहन के बीच रखे संबंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा लाभदायक होते हैं।



गजल
ओम निश्चल

राखी आ गई

फिर उमड़ आई बरन की याद राखी आ गई
फिर से पकवानों में आया स्वाद राखी आ गई

थाल में कुमकुम और रोली सज गई
हृदय में उठ रहा है आह्लाद राखी आ गई

गुनगुनाने-सा लगा है फिर ये घर
फिर हुआ है नायक आबाद राखी आ गई

चैनलों पर गीत गाए जा रहे
छंट गया है जेलन से श्रवसाद राखी आ गई

बंध गई हैं राखियाँ फिर हाथ में
बरन-भाई कर रहे संवाद राखी आ गई

एक धागे में जो चाहे बांध लो
भाईघरे का यही मरजाद राखी आ गई

लघुकथाएं

शदी के कुछ दिन बाद ही विदेश जा बसी बहू ने, सुबह-सुबह फोन की घंटी बजते ही अनमने मन से अपनी सास का कॉल रिसीव किया, बोली, ‘प्रणाम मां जी, कैसी हैं आप?’ सासू मां बोलीं, ‘अरे बहू, रक्षाबंधन पर अपने भाई की राखी भेजना मत भूलना। शदी के बाद पहली राखी है, तुम्हारे घर पर सब इंतजार करेगे।’ ‘जी मां जी, भेज दूंगी, आप चिंता ना करें।’ उसने सधी-सपाट आवाज में जवाब दिया और फोन रखते ही सोचने लगी, ‘फोन, चैट, वाट्सएप सब तो चलता ही रहता है, मैं कौन-सी भाई से साल में एक बार मिलती हूं? इस साल ही तो दूर आई हूं। राखी भेजने की औपचारिकता करना ही क्या जरूरी है?’ बाद में वह घर-ऑफिस के कामों में ऐसा उलझी कि यह भूल ही गई रक्षाबंधन है कब? रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह भाई ने अपनी कलाई पर सजी सुंदर राखी की फोटो भेजी और एक प्यारा-सा संदेश भी। ‘कितना खुश हूं मैं कि वहां जाकर भी तुम्हें राखी का त्योहार याद रहा, अपने भाई के लिए स्नेह की डोर भेजना न भूलो। देख तो दूर रहकर भी हमारे बीच कभी दूरियां नहीं आएंगी। यह रेशमी धागा हमें हमेशा बांधे रखेगा।’ फिर फोन पर बात हुई तो भाई-बहन दोनों का गला रंध गया। आंखों में नमी लिए खुशी से कांपते हाथों से उसने सासू मां को फोन लगाया तो उन्होंने

वृद्धाश्रम में रहने वाले एक बुजुर्ग रोज सुबह सबसे पहले वहां का उपस्थिति रजिस्टर खोलते और कांपते हाथों से अपने नाम के सामने हस्ताक्षर करते थे। एक दिन वहां मौजूद एक स्वयंसेवक ने उत्सुकता से पूछा, ‘अंकलजी, यहां तो कोई रोज जांच भी नहीं करता, फिर आप हर दिन रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों करते हैं?’ बुजुर्ग हल्का-सा मुस्कुराए और बोले, ‘आदत है बेटा बरसों पुरानी आदत।’ कुछ पल चुप रहने के बाद उनकी आंखें कहीं दूर टिक गईं, फिर धीमे स्वर में बोले, ‘पूरी जिंदगी बैंक के कागजों पर, जमीन के दस्तावेजों पर, मकान के रजिस्ट्री पेपर्स पर, न जाने कितनी बार हस्ताक्षर करता आता। हर हस्ताक्षर किसी न किसी जिम्मेदारी या अधिकार का प्रतीक था। लेकिन जिस दिन आखिरी

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, ‘राखी बांध ली भाई ने?’ ‘जी मां जी, पर...’ बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, ‘अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।’ कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, ‘बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।’ *

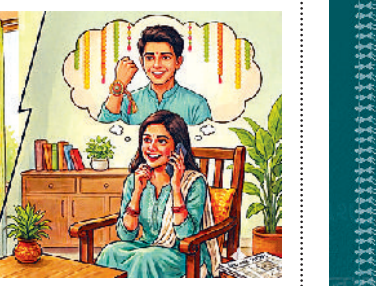
हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

—कृति आर.के. जैन

कच्ची डोर



मकान भी बेटे के नाम कर दिया, उसी दिन मेरे नाम का कमरा बदल गया और मैं इस वृद्धाश्रम में आ गया।’ स्वयंसेवक के पास कोई शब्द नहीं बचे। वह केवल बुजुर्ग के चेहरे को देखता रह गया। बुजुर्ग ने धीरे से रजिस्टर बंद किया, गहरी सांस ली और बोले, ‘अब यहां रोज इसलिए हस्ताक्षर करता हूं, ताकि कम से कम एक जगह तो हर दिन यह दर्ज होता रहे कि मैं अभी जिंदा हूं, मेरा अस्तित्व अभी पूरी तरह मिटा नहीं है।’ यह सुनते ही रजिस्टर का वह साधारण-सा पन्ना अचानक बहुत भारी हो गया। उस दिन स्वयंसेवक ने पहली बार

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

—कृति आर.के. जैन

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

करुणा की शक्ति

वर्तमान समय का सबसे ज्वलंत सवाल यह है कि युद्ध, हिंसा, गैरबराबरी, अन्याय, शोषण जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान क्या हो सकता है? इस सवाल का मुकम्मल जवाब है नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी की किताब ‘करुणा-समाधान की शक्ति’। आज हमारी सभ्यता जितनी तेजी से विकास के नए आयाम गढ़ रही है, उतनी ही तेजी से चुनौतियों के दलदल में फंसती भी जा रही है। मनुष्य तकनीकी रूप से जितना सक्षम हो रहा है, सामाजिक रूप से उतना ही विपन्न भी होता जा रहा है। यहाँ तक कि अपने आप से भी उसका संबंध

करुणा



करुणा

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

—कृति आर.के. जैन

देश के कोने-कोने का भरोसा

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability at: www.mushroomworld.com
Amazon | Flipkart

वज़न बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियाँ

10 दिनों में अस्थि देखें

क्योंकि वज़न है, तो वज़नवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry + 91 888 922 3333

धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव

केरल का बहुरंगी महापर्व ओणम

फूलों की रंगोलियों से सजे आंगन, सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, लोकनृत्यों की थिरकन और केले के पते पर परोसा गया ओणसदा। ओणम में केरल की संस्कृति अपने सबसे जीवंत रूप में नजर आती है। राजा बलि की पौराणिक गाथा से जुड़ा यह पर्व आस्था, प्रकृति से जुड़ाव, परंपरा, सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का अद्भुत संगम है। विगत सप्ताह आरंभ हो चुके इस सांस्कृतिक उत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

पर्वल्लास / धीरज बसाक

यदि उत्तर भारत में होली, रंगों का उत्सव है, पश्चिम भारत में गुजरात का नवरात्र लोकनृत्यों का उत्सव है और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा आस्था का विराट आयोजन है, तो कह सकते हैं

इन सभी रंगों और उत्सवों के महासंगम जैसा है-ओणम। दस दिनों तक मनाए जाने वाले इस पर्व के दौरान पूरा केरल मानो एक विशाल सांस्कृतिक रंगमंच में बदल जाता है- जहां फूलों की रंगोलियां (पुक्कलम), सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, कथकली और पुलिकली जैसे लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत, सामूहिक भोज (ओणसदा) तथा महाबलि की लोकगाथा, ये सब मिलकर एक अद्भुत उत्सवी वातावरण रचते हैं। दस दिनों तक मनाए जाने वाले ओणम का अंतिम उत्सव दिन इस साल 26 अगस्त को संपन्न होगा।

भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान: ओणम केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह केरल की लोककला, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महा उत्सव भी है। शायद यही कारण है कि ओणम आज केरल की सीमाओं से निकलकर भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान का हिस्सा हो चुका है, जहां उत्सव केवल मनाया नहीं जाता बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

पर्व मनाने की पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार एक समय में केरल में राजा महाबलि का शासन हुआ करता था। महाबलि बेहद न्यायप्रिय, दयालु और प्रजावत्सल शासक थे। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई गरीब नहीं था। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता था और सभी लोग सुखी थे। देवताओं के आग्रह पर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर महाबलि की दयालुता और दानवीरता की परीक्षा लेने



पारंपरिक वेशभूषा में ओणम मनाते स्थानीय कलाकार

हेतु तीन पग भूमि मांगी। जब महाबलि ने कहा आप नाप लें, तो वामन के अवतार में भगवान विष्णु ने दो पगों में पृथ्वी और आकाश को नाप लिया और अब तीसरे पग के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी, तो महाबलि ने अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। इस पर भगवान विष्णु ने बलि की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आया करेंगे। वास्तव में ओणम का उत्सव उनके आगमन की खुशी का उत्सव है। यह पौराणिक कथा केवल धार्मिक आस्था की नहीं बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था, समानता, न्यायप्रियता, त्याग और जनकल्याण का संदेश देती है।

हर दिन होता है कुछ खास: ओणम की शुरुआत में सबसे पहले घरों के आंगन में फूलों की



ओणम की सांस्कृतिक पहचान है सर्प नौका दौड़

रंगोलियां बनाई जाती हैं। प्रत्येक दिन रंग-बिरंगे फूलों से सजने वाली यह रंगोली प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्यबोध का प्रतीक है। फूलों की इन रंगोलियों को यहां की स्थानीय भाषा में पुक्कलम कहा जाता है। ओणम के दौरान पारंपरिक नृत्य तिरुवातिराकली, कुम्माट्टिकली, पुलिकली (बाघ नृत्य) और कथकली की प्रस्तुतियां पूरे राज्य में आकर्षण का केंद्र बनती हैं। लोकगीतों की मधुर धुनों और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज से इस दौरान केरल के गांव और शहर झूम उठते हैं। इसी समय होने वाली केरल की प्रसिद्ध वल्लमकली (सर्प नौका दौड़) तो विश्व भर में ओणम की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है। इन लंबी-लंबी नौकाओं के अगले सिरे सांप के फन जैसे होते हैं। इनमें सैकड़ों नाविक एक साथ पूरे तालमेल

के साथ चप्पू चलाते हैं। यह केवल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि सामूहिकता, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन है।

धार्मिक-सामाजिक समभाव का पर्व: ओणम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक धर्म या एक समुदाय का पर्व नहीं है। केरल में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग भी इसे पूरे सम्मान और उत्साह से मनाते हैं। ओणम का महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष यह है कि यह वर्ग, जाति और धर्म की सीमाओं को पीछे छोड़कर लोगों को एक सूत्र में बांधता है। दस दिनों के इस उत्सव में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और सामूहिक भोज का आनंद उठाते हैं। यही कारण है कि ओणम को सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का भी महापर्व कहा जाता है।

सबके साथ ओणसदा का आनंद: ओणम का जिक्र ओणसदा के बिना अधूरा है। केले के पते पर परोसा जाने वाला यह पारंपरिक भोज केवल भोजन नहीं है, यह केरल की पाक संस्कृति का भी उत्सव है। इसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, सांभर, अलियल, ओणम, थोरण, अचार, पापड़ और अंत में पायसम परोसा जाता है। इस भोजन की विशेषता यह होती है कि इसमें स्वाद के साथ संतुलित पोषण और सामूहिक भोजन की भावना भी शामिल होती है। परिवार व मित्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

कृषि-प्रकृति से संबंध का प्रतीक: ओणम चूँकि वर्षा ऋतु के बाद अच्छी फसल आने की

खुशी का पर्व है, इसलिए इसका गहरा संबंध कृषि और प्रकृति से भी है। इस पर्व में की जाने वाली फूलों की सजावट, हरियाली, नई फसल और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान इस पर्व की प्रमुख विशेषता है। आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया की चिंता बन चुका है, तब ओणम हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। *

एक सवाल हम सभी को अकसर परेशान करता है कि अगर हम आगे बढ़ना चाहते हैं, प्रगति के साथ सकारात्मक बदलाव करना चाहते हैं तो फिर अपनी जिंदगी में मनचाहा बदलाव क्यों नहीं ला पाते हैं? इसका जवाब हमें ठहरकर अपने भीतर ही खोजना होगा।



आप अपनी जिंदगी में क्यों नहीं बढ़ पा रहे आगे

सेल्फ मोटिवेशन
जोगिंदर रोहिल्ला

हम में बहुत से लोग गोल डिसाइड करते हैं। प्लान बनाते हैं। मोटिवेशन की किताबें पढ़ते हैं। अफमेशन करते हैं और अपने भविष्य को विजुअलाइज भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों हम वो अचीव नहीं कर पाते हैं। तब अकसर हम दूसरे लोगों को, भाग्य को और परिस्थितियों को दोष देना शुरू करते हैं। सवाल है आखिर हमें आगे बढ़ने से रोकता क्या है?

सोच को रखें पॉजिटिव: डॉ. जो डिस्पेंजा की किताब 'बीकमिंग सुपरनेचुरल' इस बारे में जिंदगी को थोड़ा अलग नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है। इसमें व्यक्त किया गया एक विचार खासतौर पर ध्यान खींचता है। इसके अनुसार, हमारे विचार और हमारी भावनाएं (इमोशन) हमारे शरीर से गहराई से जुड़ी हुई होती हैं। विचार, भावना को प्रभावित करता है। भावना फिर विचार को प्रभावित करती है। और यह चक्र चलता रहता है। बार-बार ऐसा होने पर यह हमारे लिए जाना-पहचाना बन जाता है। हमारा दिमाग उस पैटर्न को पहचानने लगता है और हम बिना सोचे उसी तरह प्रतिक्रिया देने लगते हैं। वही डर, वही चिंता, वही प्रस्ट्रेशन और वही आत्म-संदेह। वास्तव में हम अपनी जिंदगी को सचेत होकर नहीं जी रहे होते हैं। हम सिर्फ वही दोहरा रहे होते हैं, जो हमारे लिए जाना-पहचाना बन चुका है। इसी विचार को दूसरी कुछ किताबें भी अलग-अलग तरीके से सामने रखती हैं। शक्ति गॉवेन की 'क्रिएटिव विजुअलाइजेशन' में बताया गया है कि जब हम अपने लक्ष्य और उस जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर अपने मन में बनाते हैं, तो वह हमारी सोच और हमारे कार्र करने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। 'द सीक्रेट' किताब ने भी जीवन में सफल होने के लिए विचारों, विश्वास और उम्मीदों के प्रभाव को लोकप्रिय बनाया। वहीं नेपोलियन हिल की 'थिंक एंड

ग्रे रीच' किताब, इच्छा, कल्पना और स्पष्ट उद्देश्य की ताकत पर जोर देती है। सबका सार यही है कि हम जिस दिशा में बार-बार अपने विचार और एनर्जी लगाते हैं, वह हमारी जिंदगी को प्रभावित करने लगती है।

अपना कॉन्सेप्ट रखें क्लीयर: एक जरूरी बात यह भी है कि सिर्फ सकारात्मक सोच काफी नहीं है। आप सुबह कह सकते हैं, 'मेरी जिंदगी बदल रही है।' लेकिन अगर अगले दस घंटे आप चिंता करते रहें, शिकायत करते रहें, खुद पर संदेह करते रहें और हर चीज के गलत होने की कल्पना करते रहें, तो उस सोच का कोई फायदा नहीं होगा। सवाल यह है कि आप वास्तव में खुद के किस रूप की प्रैक्टिस कर रहे हैं? उस व्यक्ति की, जो अब तक दुख, डर को दोहराता आ रहा है या उस इंसान की, जो आप बनना चाहते हैं?

बदलाव के प्रति रहें दृढ़: ट्रांसफॉर्मेशन कुछ हद तक एक तितली की लाइफ साइकिल जैसा होता है। एक कैटरपिलर को तितली बनने के लिए अपने पुराने रूप को छोड़ना पड़ता है। वह हमेशा कैटरपिलर बने रहकर तितली नहीं बन सकता। शायद इंसानों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी बाहरी जिंदगी



बदलने से पहले कई बार हमारे भीतर कुछ बदलना जरूरी होता है। इसलिए जब भी लगे कि मैं किसी नकारात्मक विचार के चक्र में जा रहा हूँ तो रुककर खुद से एक सवाल पूछिए, 'क्या यह विचार मुझे उस इंसान के करीब ले जा रहा है, जो मैं आगे बनना चाहता हूँ?' **एनर्जी को दें सही दिशा:** एक पुरानी बौद्ध शिक्षा हमें याद दिलाती है, 'हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे ही बनते जाते हैं।' आपका बदलाव उस समय शुरू होगा, जब आप उन विचारों, भावनाओं और आदतों को पहचानना शुरू करेंगे, जो आपको पीछे खींच रहे हैं और सचेत होकर उस इंसान की प्रैक्टिस करना शुरू करेंगे, जो आप बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी जिंदगी बदलना चाहते हैं, तो शुरुआत नए विचार और नई भावना से करनी होगी। आपका बदलाव बाहर नहीं आपके भीतर, आपके विचार में ही छिपा हुआ है। *

माई-बहन के स्नेह के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन को लेकर कई पौराणिक-ऐतिहासिक कथाएं प्रचलित हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस रिश्ते को गहन अर्थ देने वाली, कई ऐसी मार्मिक घटनाएं सामने आईं, जो अपने-आप में मिसाल हैं।

दिल को छूने वाले राखी के अनोखे किस्से



शिवम मिस्त्री को राखी बांधती अनामता अहमद



साठ साल बाद अपने भाइयों से मिली बलेश देवी

कुछ अलग
शिखर चंद जैन

रक्षाबंधन सिर्फ एक राखी या रेशमी धागा बांधने की रस्म भर नहीं, बल्कि मन से जुड़ा बंधन होता है। यह सिर्फ सगे भाई-बहन के बीच नहीं, किसी भी उस शख्स या चीज से स्नेह को दर्शाता है, जिससे भाई की अनुभूति मिलती है। ऐसी ही कुछ घटनाओं के बारे में जानिए।

अंगदान से मिला नया भाई: साल 2025 में अंगदान की एक बड़ी ही भावुक सच्ची घटना सामने आई। 9 साल की एक बच्ची रिया को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। रिया के माता-पिता ने एक बेहद साहसिक फैसला लेते हुए उसके अंग दान कर दिए। रिया का हाथ ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट के जरिए एक लड़की अनामता अहमद को लगाया गया। 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन के त्योहार पर, अनामता करीब 200 किलोमीटर का सफर तय करके रिया के घर पहुंची। वहां उसने रिया के सगे भाई शिवम मिस्त्री की कलाई पर उसी हाथ से राखी बांधी, जो कभी उसकी बहन का हुआ करता था। हुआ यह कि मुंबई के गोरगांव की रहने वाली 16 वर्षीय अनामता अहमद ने साल 2022 में बिजली के करंट की चपेट में आने से अपना दाहिना हाथ



सैनिकों के लिए राखियां बनाती स्कूली छात्राएं

खो दिया था। सितंबर 2024 में गुजरात के वलसाड की 9 वर्षीय मासूम बच्ची रिया मिस्त्री को डॉक्टरों ने ब्रेन-हैमरेज के बाद ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। वलसाड की 'डोनेट लाइफ' एनजीओ की काउंसिलिंग के बाद रिया के माता-पिता ने उसके अंग दान कर दिए। ग्रीन कॉरिडोर के जरिए रिया का दाहिना हाथ मुंबई लाया गया और ग्लोबल हॉस्पिटल पर अनामता को ट्रांसप्लान्ट किया गया।

मोडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई के प्रयासों और सोशल मीडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई

विशेष : रक्षाबंधन
28 अगस्त

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर,

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर,



वृक्ष रक्षाबंधन मनाती महिलाएं

लद्दाख, जैसलमेर और सिक्किम जैसे अत्यंत दुर्गम सीमावर्ती इलाकों में तैनात जवानों तक एयरलिफ्ट के माध्यम से पहुंचाने की जिम्मेवारी ली और उसे वहां तक पहुंचाया भी गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन: ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *

सिने डेंड
अशोक जोशी

भा रतीय परिवार व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अनोखा और प्यारा होता है। बचपन में जहां इसमें नोक-झोंक होती है, वहीं उम्र बढ़ने के साथ यह रिश्ता भावनात्मक सहारे में बदल जाता है। हिंदी फिल्मों ने इस रिश्ते के अलग-अलग रंगों को पर्दे पर प्रस्तुत किया है। कहीं भाई, बहन की रक्षा के लिए सब कुछ छोड़ देता है, कहीं बहन-भाई के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है और कहीं दोनों एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त बनकर सामने आते हैं।

बीते दौर की फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता: पुरानी हिंदी फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता प्रायः परिवार की भावनात्मक धुरी के रूप में दिखाई देता था। 'छोटी बहन' (1959) और 'राखी' (1962) जैसी फिल्मों ने भाई-बहन के स्नेह, जिम्मेदारी और त्याग को प्रमुखता दी। इन फिल्मों में परिवार केवल कहानी की पृष्ठभूमि नहीं था, परिवार ही कहानी का मूल भाग था। 'बड़ी बहन' (1949), 'मंझली दीदी' (1967) जैसी फिल्मों में भी यह भाव देखने को मिलता है।

सत्तर और अस्सी के दशक में सामाजिक संघर्ष तथा व्यावसायिक सिनेमा के प्रभाव के साथ भाई की भूमिका अकसर 'रक्षक' के रूप में उभरकर सामने आई। बहन की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करना भाई के चरित्र की पहचान बन गया। लेकिन इसी दौर में और बाद के दशकों में आई कुछ फिल्मों ने भाई-बहन के रिश्ते के दूसरे पक्षों को भी सामने रखा।

भाई-बहन की कुछ अलग कहानी 'हरे रामा हरे कृष्णा': साल 1971 में देव आनंद और जीतन अमान अभिनीत फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' बदलते सामाजिक वातावरण, पश्चिमी प्रभाव, नशे और हिंसा संस्कृति के बीच एक भाई द्वारा अपनी बहन को वापस पाने के प्रयास की मार्मिक कहानी थी। भाई-बहन के बीच बचपन का स्नेह, परिस्थितियों के कारण बिछोह में बदल जाता है और फिर भाई अपनी बहन को उस दुनिया से निकालने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें वह फंस चुकी है।

इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाई अपनी बहन का केवल 'रक्षक' नहीं है, वह उसके अतीत, उसकी पीड़ा और उसकी पहचान को समझने की कोशिश करता है। फिल्म का लोकप्रिय गीत 'फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' तो हिंदी सिनेमा में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक बन चुका है। आज भी यह गीत राखी के अवसर पर उसी आत्मीयता से सुना जाता है।

संयुक्त परिवार में भाई-बहन का प्यार 'हम

भाई-बहन के शाश्वत रिश्ते को केंद्र में रखकर या इसके इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और वास्तविकताओं पर हर दौर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। भाई-बहन के स्नेह भरे रिश्ते के विविध आयामों को दर्शाती कुछ फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर की फिल्मों में रची गई भाई-बहन के रिश्ते की दास्तान



साथ-साथ हैं': नब्बे के दशक में सिनेमा ने संयुक्त परिवार और भाई-बहन के रिश्ते को अधिक घरेलू और सहज रूप में प्रस्तुत किया। 'हम साथ-साथ हैं' (1999) में भाई-बहनों के बीच प्रेम, विश्वास और त्याग कहानी का महत्वपूर्ण भाग है। यहां भाई-बहन केवल परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि एक-दूसरे के भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और आदर देते हैं।

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी उसकी कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी



को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है।

आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो': साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं।



बदलते दौर की बदलती पारिवारिक संरचना के बीच भाई-बहन के भरोसे, स्नेह और आपनेपन को सामने लाती है। **भाई के लिए बहन के संघर्ष की कहानी दिखाती 'सरबजीत':** 'सरबजीत' (2016) में भाई-बहन के रिश्ते का एक बिल्कुल अलग रूप दिखाई देता है। दलवीर कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *

आदर देते हैं।

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी उसकी कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी

पर्ट से बाहर भी बने भाई-बहन के रिश्ते

फिल्मी पर्दे पर कलाकर एक-दूसरे के भाई-बहन बने नजर आते हैं, जबकि अकसर वास्तविक जीवन में उनके बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता। इसके उलट फिल्मी दुनिया से जुड़ी कुछ हस्तियों ने पर्दे के बाहर भाई-बहन का रिश्ता कायम किया और इस आत्मीय रिश्ते को ताऊ निमाया भी। महान गायिका लता मंगेशकर के जीवन में ऐसे आत्मीय रिश्तों की विशेष जगह थी। उन्होंने कई कलाकारों के साथ उनकी पारिवारिक आत्मीयता थी। दिलीप कुमार के साथ उनका संबंध विशेष रूप से भावपूर्ण था। दिलीप कुमार उन्हें बहन मानते थे और लता जी भी उन्हें अपने भाई का स्थान देती थीं। राखी के अवसर पर दोनों का यह संबंध सार्वजनिक रूप से भी चर्चित रहा। ऐसे ही संगीतकार मदन मोहन और गायक मुकेश को भी लता जी अपना भाई मानती थीं। इन दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।

